रजिस्ट्री सं. डी.—(डी एन)—73 REGISTERED NO. D—(DN)—73

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 15] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 10, 1982 (चैत्र 20, 1904)
No. 15] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 10, 1982 (CHAITRA 20, 1904)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके ।

(Separate paging is given to this Part in order that if may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खण्ड 1—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) द्वारा जारी किये गये संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं . .	341
भाग I—खण्ड 2—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनायें .	467
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किये गये संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनायें .	7
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनायें	455
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*
भाग II—खण्ड 1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ . . .	*
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*
भाग II—खण्ड 3—उप खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरण (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किये सामान्य सांविधिक नियम (जिसमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	731
भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरण (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किये गये सांविधिक आदेश और अधिसूचनायें . .	1409
भाग II—खण्ड 3(iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरण (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किये गये सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी में प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	159
भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किये गये सांविधिक नियम और आदेश . .	63
भाग III—खण्ड 1—उच्चतम न्यायालय, महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेलवे प्रशासनों, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनायें . . .	4571
भाग III—खण्ड 2—पेटन्ट कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनायें और नोटिस . . .	179
भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनायें . .	97
भागIII—खण्ड 4—विविध अधिसूचनायें जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनायें, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं . . .	1010
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा विज्ञापन और नोटिस . . .	95
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दिखाने वाला अनुपूरक . .	*

*पृष्ठ संख्या प्राप्त नहीं हुई ।

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence(..	341
PART 1—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence)	467
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Resolutions and non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	7
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	455
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1-A.—Authoritative text in the Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations	
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (i).—General Statutory Rules (including orders, bye-laws, etc. of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	731
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (ii).—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	1409
PART II—SECTION 3(iii).—Authoritative texts in Hindi (other than such texts published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules and Statutory Orders (including bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by General Authorities (other than Administrations of Union Territories)	159
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence ..	63
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Supreme Court, Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administrations, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	4571
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Office, Calcutta ..	179
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	97
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1010
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies	95
PART V—Supplement showing statistics of Birth and Deaths etc. both in English and Hindi ..	*

*Folio Nos. not received

भाग I—खण्ड 1
PART I—SECTION 1
(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 फरवरी 1982

सं० 19/प्रेज/82:—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लिये "शौर्य चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं:—

1. श्री विनोद कुमार डिमरी
भूतपूर्व उप वन रेंजर, जमानी,
जिला होशंगाबाद, मध्य प्रदेश।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि: 24 जून, 1978)

(मरणोपरान्त)

श्री विनोद कुमार डिमरी मध्य प्रदेश में वन रेंजर के पद पर नियुक्त किये गये थे। जून, 1978 को उप वन रेंजर के रूप में उनकी बदली होशंगाबाद वन खण्ड के जमानी सब डिवीजन में की गई। यह क्षेत्र पेड़ों को गैर कानूनी ढंग से काटने वाले असामाजिक तत्वों की वजह से कुख्यात था। 23/24 जून, 1978 की रात को 2 बजे जब वे अपने वन गार्डों के साथ वाहनों की जांच कर रहे थे तो उन्होंने पीपलधाना गांव के समीप मुख्य तवी नहर पर गैर कानूनी तरीके से कटी लकड़ियों से भरी दो बैल गाड़ियां पकड़ ली। उन्होंने अभियुक्तों को बैलगाड़ियों सहित जमानी चलने को कहा। वे मुश्किल से लगभग एक किलोमीटर ही चले होंगे कि पीपलधाना गांव के 15-20 व्यक्तियों ने श्री डिमरी तथा अन्य व्यक्तियों पर अचानक हमला बोल दिया। उन्होंने घातक हथियारों से लैस इन व्यक्तियों का बड़ी बहादुरी से मुकाबला किया। इस मुठभेड़ में वे गम्भीर रूप से जख्मी हो गये जिसके कारण 25 जून, 1978 की सुबह उनकी मृत्यु हो गई।

श्री विनोद कुमार डिमरी ने इस प्रकार वीरता, साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. श्री धर्म पाल विज,
3967, रोशनारा रोड, दिल्ली।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि: 19 मार्च, 1980)

19 मार्च, 1980 को दोपहर बाद दो बजे के करीब जब श्री धर्म पाल विज अपनी कार में बजीरपुर से गुजर रहे थे तो उन्होंने एक मोटर साइकिल पर तीन व्यक्तियों को देखा। एक व्यक्ति के पास सन्तरी रंग का एक थैला था। मोटर साइकिल के संकेत पर श्री विज ने अपनी कार रोक दी। कार रुकते ही पिस्तौल तथा रिवाल्वर से लैस दो व्यक्ति इनके पास आये। एक व्यक्ति अपनी रिवाल्वर लेकर कार की बांई ओर की खिड़की और दूसरा पिस्तौल लेकर दांई ओर की खिड़की के पास खड़ा हो गया तथा श्री विज से कहने लगे कि जो कुछ भी उनके पास है उन्हें दे दें अन्यथा उन्हें जान से मार देंगे। उन्होंने उनसे उनकी घड़ी, सोने की दो अंगूठियां, और सोने का एक कड़ा ले लिया और फिर पंजाबी बाग की ओर चल दिये। श्री विज ने अपनी कार से उनका पीछा किया और ब्रिटानिया बिस्कुट फैक्टरी के पास उनकी मोटर साईकिल को एक ओर से धक्का दिया जिसके फलस्वरूप वे नीचे गिर पड़े। श्री विज ने कार से बाहर निकल कर उनमें से एक व्यक्ति को पकड़ लिया जो बाद में मुजफ्फरनगर का राजेन्द्र उर्फ विजय निकला। इसी बीच घटनास्थल पर स्थानीय पुलिस भी पहुंच गई और उन्होंने मेरठ के जयसिंह नामक दूसरे व्यक्ति को दबोच लिया। परन्तु धर्म लाल नामक तीसरा व्यक्ति किसी तरह भागने में सफल हो गया।

श्री धर्म पाल विज ने इस प्रकार साहस, दृढ़ निश्चय तथा वीरता का परिचय दिया।

3. फ्लाइंग अफसर सुरेश गट्टू (14562),
उड़ान (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि: 23 मई, 1980)

23 मई, 1980 को, फ्लाइंग अफसर सुरेश गट्टू को दो वायुयानों वाली एक सैक्टर टोह उड़ान में नं० 2 के तौर पर उड़ने का आदेश दिया गया। उड़ान पूरी होने के बाद, हजारों फुट के ऊपर फार्मेशन से अलग होकर, जब फ्लाइंग अफसर सुरेश गट्टू आउनबिड में मुड़े तो उन्होंने देखा कि उनके उड़ान यंत्र टिमटिमा रहे हैं और नाकारा हो चुके हैं। इस मौके पर, उनके रेडियो टेलीफोन ने काम करना बन्द कर दिया। उन्होंने सामान्य साधनों के अण्डरकैमरियेज को नीचे उतारने के विफल प्रयास किये। कोन अटक चुका था और उसे हाथ से खींचने के सभी प्रयास विफल हो चुके थे। फ्लैप्स को नीचे झुकाने में भी असफलता मिली। ट्रिमर भी अटका हुआ और नाकारा था और काकपिट में बिजली के संकेत-चिह्न ठप्प पड़ चुके थे। इससे उन्हें बिजली फेल हो जाने की पुष्टि हो गई। फ्लाइंग अफसर सुरेश गट्टू ने अण्डरकरियेज को आपात-विधि से नीचे उतारा और बिना फ्लैप खोले नीचे की ओर आये। भूमि छूने के बाद, उन्होंने

एच० पी० काक बंद कर दिया और टेलशूट को चालू किया। टेलशूट नहीं चला और ले-देकर, मैक्सरेट ब्रेकें भी नकारा हो चुकी थीं (उनकी थ्रेशोल्ड गति 300 कि० मी० प्रति घण्टा थी क्योंकि विमान के फ्लैप बन्द थे)। फ्लाइंग अफसर सुरेश गट्टू ने बड़े भारी संकट से निपटते समय अपनी सुरक्षा की जरा भी परवाह न करते हुए बहु-मूल्य वायुयान को बचा लिया और पट्टी के आखिरी सिरे तक वायुयान को सुरक्षित रोकने में सफल हो गये।

फ्लाइंग अफसर सुरेश गट्टू ने इस प्रकार उच्च कोटि की व्यावसायिक कुशलता, योग्यता तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

4. जी 10817 ड्राइवर मैकेनिकल इक्विपमैंट चेत सिंह (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 24 जून, 1980)

24 जून, 1980 को हिमाचल प्रदेश में किन्नौर जिले के मलिंग नामक स्थान पर मलिंग नाले में भयंकर बाढ़ के कारण हिन्दुस्तान तिब्बत सड़क का लगभग 300 फुट भाग कट कर बह गया। इस कारण पूह से कौरिक तक सारा यातायात ठप्प हो गया। पहाड़ी से तीव्र गति से गिरने वाले पत्थरों ने पैदल यात्रियों के आवागमन को भी जोखिम पूर्ण बना दिया था।

ऐसी विषम परिस्थिति में 851 जल विकास व्यवस्था प्लाटून के जी-10817 ड्राइवर मैकेनिकल इक्विपमैंट चेत सिंह को दरार वाले क्षेत्र में डोजर से नई जगह काटने और बही हुई जगह पर सड़क बनाने के लिये कहा गया। तीव्र गति से गिरने वाले पत्थरों से चालक और उपस्कर दोनों की सुरक्षा के लिये लगातार खतरा बना हुआ था। इसके बावजूद श्री चेत सिंह अपने कार्य में लगे रहे और उसका अधिकांश भाग पूरा कर दिया। ये बहुत से शिला-खण्डों से बचते रहे, लेकिन 2 जुलाई, 1980 को 0745 बजे डोजर चलाते समय एक तीव्र गति से गिरने वाला पत्थर उन्ह आ लगा और उनके सिर मे गहरी चोट लगी। प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें पूह के विभागीय अस्पताल में ले जाया गया, लेकिन अस्पताल पहुंचने से पूर्व ही उनकी मृत्यु हो गई।

श्री चेत सिंह ने इस प्रकार अदम्य साहस, दृढ़ निश्चय और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

5. कुमारी सुनीता कपूर और श्रीमती उर्मिला कान्ता कपूर
ग्राम मोरेह, जिला टेलगनोपाल, मणिपुर।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 17 जुलाई, 1980)

मणिपुर में टेलगनोपाल जिले के मोरेह ग्राम में श्री आनन्द देव कपूर के घर में 17 जुलाई, 1980 की रात में लगभग 8.30 बज दो हथियार बन्द लुटेरे घुस गये। उनको देख कर श्री कपूर और घर के अन्य निवासी इतने भयभीत हो गये कि वे सहायता के लिये चिल्ला भी न सके। लुटेरों ने श्री कपूर से नकदी और सोने के जेवरात की मांग की और जिसके न देने पर सारे घरवालों को मार डालने की धमकी दी। उनकी 12 वर्षीय पुत्री कुमारी सुनीता कपूर ने तुरन्त एक सशस्त्र लुटेरे के हाथ पर "डागरा" (चावल बीनने के लिये बढ़िया बांस के टुकड़ों से बनाई गई, घरेलू वस्तु) से प्रहार किया। उसके इस अचानक साहसिक कार्य के फलस्वरूप लुटेरे के हाथ से भरी हुई पिस्तौल नीचे गिर गई और वह बुरी तरह घबरा गया। इसी बीच श्रीमती उर्मिला कान्ता कपूर ने दूसरे लुटेरे को पीछे से पकड़ लिया। हाथापाई हुई और लुटेरे गोली नही चला सके पर भागने में सफल हो गये। पुलिस ने घटना स्थल से एक भरी हुई पिस्तौल और एक .303 का कारतूस बरामद किया।

सशस्त्र लुटेरों को रोकने में कुमारी सुनीता कपूर और श्रीमती उर्मिला कान्ता कपूर ने अपने प्राणों को खतरे में डाल कर, साहस और उच्चतम कोटि की सूझ बूझ का परिचय दिया।

6. श्री यांगलेम्से, खेमगुगन,
ग्राम रक्षक, चौकी कमांडर (वी० जी० एल०/ एच० डब्ल्यू० संख्या 7981)

चिफूर गांव, थोनोकन्यू सर्किल, जिला तुएनसांग, नागालैंड।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 2 सितम्बर, 1980)

2 सितम्बर, 1980 की रात मे लगभग 8.15 बजे श्री यांगलेम्से खेमनुगन, ग्राम रक्षक चौकी कमांडर, को जब यह सूचना मिली कि कुछ भूमिगत विरोधियों द्वारा चिफूर गांव पर हमला करने की संभावना है तो वे तत्काल उस गांव को ओर भागे और घर-घर पर जाकर सीटी बजाकर गांव के सभी रक्षकों को सावधान करने पर गांव की सुरक्षा के लिये भी समुचित व्यवस्था की। आधी रात के समय मालूम हुआ कि करीब 100 भूमिगत सशस्त्र व्यक्ति स्व-चालित हथियारों से लैस लगभग 50 कुलियों सहित चिफूर गांव के बहुत निकट आ गये है। फिर श्री खेमगुमन ने गांव का बड़ा ढोल बजाया और भूमिगत लोगों को ललकारा कि वे उनकी किसी भी चुनोती को स्वीकार करने के लिये तैयार है। यद्यपि चिफूर की ग्राम रक्षक चौकी में केवल 40 ग्राम रक्षकों के पास .303 राइफलें और कुछ बन्दूकें थीं फिर भी श्री खेमनुगन के दृढ़ संकल्प से प्रोत्साहित होकर अपने से उत्तम बल रखने वालों का सामना करने के लिये चट्टान की तरह डट गये। पौ फटने पर भूमिगत व्यक्ति गांव पर हमला किये बगैर ही अपने कुलियों के साथ वहां से चले गये।

श्री यांगलेम्से खेमनुगन ने इस प्रकार दृढ़ निश्चय, असाधारण साहस तथा उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

7. श्री एच० खुंगी खोमनुगन, (गांव का चौकीदार नं० 7976),
पंग गांव, थीनोकन्यू सर्कल, जिला तुएनसांग।
(मरनोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 3 सितम्बर, 1980)

3 सितम्बर, 1980 को गांव के चौकीदार श्री एच० खुंगी खीमनुगन पंग गांव को जाने वाले रास्ते पर सन्तरी के काम पर तैनात थे। अचानक वहां स्वचालित हथियारों से लैस बड़ी संख्या में भूमिगत सशस्त्र व्यक्ति आ गये। श्री खोमनुगन अच्छी तरह समझते थे कि वे उन्हें नहीं छोड़ेंगे फिर भी वे अपनी जगह पर डटे रहे और .303 राइफल से उन्होंने चार गोलियां विरोधियों पर चला दीं। इससे विरोधियों के पक्ष के कुछ व्यक्ति घायल हुए और कुछ मारे गये। इस के फौरन बाद विरोधियों ने उन पर स्वचालित हथियारों से बार-बार गोली चलाई गई और घटनास्थल पर ही उनकी मृत्यु हो गई।

श्री एच० खुंगी खीम-नुगन ने इस प्रकार असाधारण साहस और अति उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

8. (1) ग्राम चौकीदार संख्या 2224, श्री सी० खोऊ खिमनगन
(2) ग्राम चौकीदार संख्या 2222, श्री पांसिंग खिमनगन
(3) ग्राम चौकीदार संख्या 8082, श्री पी० थंगसोय खिमनगन और
(4) ग्राम चौकीदार संख्या 7978, श्री लंगसोय खिमनगन।
सभी ग्राम पांग, थोनोकन्यू सर्कल, जिला त्यानसांग, नागालैंड।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 3 सितम्बर, 1980)

3 सितम्बर, 1980 को लगभग ग्यारह बजे सुबह करीब 100 भूमिगत विरोधी भारी संख्या में स्वचालित हथियारों से लैस करीब 50 कुलियों सहित उत्तरी छोर से पांग गांव में घुस गये और तत्काल लूटपाट करने में और मकानों को आग लगाने में लग गये। वे रुक-रुक कर लगातार अपने स्वचालित हथियारों से गोलियां चलाते रहे। पुरानी 303 राइफलों और बन्दूकों से लैस गांव में उपलब्ध ग्राम रक्षकों ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा के लिये बहुत भारी खतरा उठाते हुए विरोधियों के आक्रमण को पछाड़ने के लिये तत्काल कार्रवाई की। श्री सी० खाऊ खिमनगन (2224) और श्री पांसिंग खिमनगन (2222) ने अपनी .303 राइफलों से गोली चलाई और दोनों ने एक-एक विरोधी को मार गिराया। विरोधियों के वापिस हटने के मार्ग का पूर्व अनुमान लगाकर गांव के चौकीदारों ने रक्षात्मक मोर्चा बना कर एक और भूमिगत व्यक्ति को मार दिया। इसी प्रकार श्री पी० थंगसोय खिमनगन (8082) ने विरोधियों के नेता को मार गिराया। गांव के ऊपरी भाग में गांव के चौकीदारों ने मिलकर दो बार घात लगाई। विरोधी जब गांव से माल लूटकर, वहां आग लगाकर और कुछ गांववालों को मार कर वापिस आ रहे थे तो चौकीदारों ने बार-बार गोली चला कर उन्हें परेशान कर दिया। पीछे हटते हुए विरोधियों को तीन घण्टे से अधिक लड़ाई लड़ने पर मजबूर होना पड़ा जिस में वे भारी संख्या में हताहत हुए। अति उत्तम बल के विरुद्ध गांव के चौकीदार विशेषकर श्री लंगसोय खिमनगन (7978) तथा उसके साथियों के असाधारण वीरता के ऐसे तालमेल से विरोधियों के मनोबल को बहुत भारी क्षति पहुंची। और वे अन्ततः छः शवों को छोड़कर भाग खड़े हुए।

श्री सी० खाऊ खिमनगन, श्री पांसिंग खिमनगन, श्री पी० थंगसोय खिमनगन तथा श्री लंगसोय खिमनगन ने इस प्रकार उत्कृष्ट वीरता, अदम्य साहस और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

9. श्री वान लालाओ,
ग्राम पियरसुन्मुख, डा० व थाना, चुराचांदपुर,
साउथ डिस्ट्रिक्ट, मणिपुर।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 9 सितम्बर, 1980)

नौ और दस सितम्बर, 1980 की रात को मणिपुर में कांगपात नामक स्थान में कुछ बदमाश, .303 की 6 राइफलें और .303 के 235 कारतूस लेकर भाग गये। श्री वान लालाओ, जो 10 सितम्बर, 1980 को इम्फाल में थे, बदमाशों का पीछा करते हुए खुंगलू गांव पहुंचे। इनके दल ने तेरह सितम्बर, 1980 की सुबह एक महिला से, .303 के 20 कारतूस बरामद किये जिन्हें उसने अपने खेत में पाया था। वहां से पुख्ता सुराग मिलने पर श्री लालाओ अपने दल सहित आसंगखुल्लन गांव पहुंचे। चौदह सितम्बर, 1980 को इन्होंने सारा गांव घेर लिया और पांच आदमियों को गिरफ्तार कर लिया। उनसे एकदम पूछताछ करने के बाद दल ने हथियारों को सौंपने के लिये गए हुए अन्य तीन बदमाशों को पकड़ने के लिये घात लगाई परन्तु वे इनके जाल में नहीं आये। इसके बाद इनका दल वापिस कांगपात लौट आया। श्री लालाओं ने पूछताछ करने में सहायता की और विरोधियों के अड्डे और बदमाशों के नेता की सूचना प्राप्त की। 17 सितम्बर, 1980 को बदमाशों के नेता श्री नगारिपन को पकड़ लिया गया। इस सम्बन्ध में अभी आगे कार्रवाई करने की योजना बनाई जा रही थी कि 18 सितम्बर, 1980 को श्री लालाओ 35 किलोमीटर दूर चासड नामक स्थान पर पहुंचे और खराब मौसम के बावजूद महत्वपूर्ण साज-सामान लाने में सफल हुए।

श्री लालाओ ने 21 सितम्बर, 1980 के बाद विभिन्न दलों का नेतृत्व किया और उपयोगी सूचना प्राप्त की। 7 अक्तूबर, 1980 से की गई संयुक्त कार्रवाई में इनके दल ने रात के समय एक आदमी को समीप ही बन्दूक लेकर घूमते हुए देखा। श्री लालाओ चुपचाप उसके पीछे हो लिए और उसे दबोच लिया और उससे हथियार छीन लिए। वह आदमी स्वयंसेवक लिक्सन निकला। नौ अक्तूबर,

1980 को एक दल का नेतृत्व करते हुए श्री लालाओं ने एक उग्रवादी को देखा और तत्काल गोली चलाकर उसे वहीं गतिहीन कर दिया। तिस पर श्री संगाए, श्री नगायूजर और श्री खनौट ने भी गोली चलाई और उस उग्रवादी को मार गिराया।

श्री लालाओ ने इस प्रकार अनुकरणीय साहस, वीरता और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

10. श्री रनवंग शिमरा पामथेंग,
ग्राम व पी० ओ० ऊपांगशक,
ईस्ट डिस्ट्रिक्ट मणिपुर।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 9 सितम्बर, 1980)

नौ और दस सितम्बर, 1980 की रात को मणिपुर के कांगपात नामक स्थान पर उग्रवादियों और स्वयंसेवकों के बीच हुई गोलाबारी के बाद उग्रवादी, .303 की 6 राइफलें और .303 के 235 कारतूस लेकर भाग गए। श्री रनवंग शिमरा पामथेंग को इस बारे में सूचना एकत्र करने और पूछताछ करने का काम मुख्य रूप से सौंपा गया क्योंकि वे सभी आदिवासी और मिताई बोलिया जानते थे। उन्होंने ये महत्वपूर्ण सुराग दिया कि हथियार उग्रवादियों ने स्वयं सीधे नहीं हासिल किए परन्तु वे उन्हें अपने आदिवासी एजेन्टों के मार्फत प्राप्त हुए हैं। इस पर वे अपने केवल छः स्वयंसेवकों को लेकर भयास्पद क्षेत्र में से 35 किलोमीटर की दूरी पैदल पार करते हुए असंगखुलन पहुंचे। तीन स्वयंसेवकों सहित श्री पामथेंग सारी रात मार्च करते रहे और ऐसी सही सूचना प्राप्त करके लौटे जिससे पांच संदिग्ध व्यक्तियों को पकड़ लिया गया। श्री पामथेंग ने तत्काल उनसे पूछताछ की और कुछ सूचना प्राप्त कर ली। बाद में और पूछताछ करने पर महत्वपूर्ण सूचना मिली और तत्काल उस पर आगे कार्रवाई की गई।

श्री पामथेंग ने यह मालूम कर लिया कि नगापैरम गांव का श्री नगापैरम हथियारों की लूट-पाट करने वाले गिरोह का नेता था और उसे पकड़ लिया गया और उस के घर से गैर कानूनी रूप से रखी हुई एक स्वचालित चालू राइफल बरामद की गई। ग्राम असंगखुलन के एक और संदिग्ध व्यक्ति श्री सिमथर को भी पकड़ लिया गया और उसके कब्जे में पाई गई एक गैर कानूनी राइफल को बरामद कर लिया गया। इनके प्रयत्नों से उग्रवादियों के छिपने के दो स्थानों का पता लगाया गया और उन्हें नष्ट कर दिया गया और 25 सितम्बर, 1980 को उग्रवादियों से सम्पर्क स्थापित कर लिया गया। 7 अक्तूबर, 1980 से जो कार्रवाई शुरु की गई उसमें स्वयंसेवियों के दल का नेतृत्व करने वाले श्री पामथेंग पहले व्यक्ति थे जो विरोधियों से भरपूर क्षेत्र के चोरी नामक गांव में घुसे। सूचना एकत्र करने में उनके अथक प्रयासों के परिणामस्वरूप 8 अक्तूबर, 1980 को विरोधियों के कैम्प पर अचानक हमला कर दिया गया। वे अपने देश दल और मार्गदर्शकों के साथ विरोधियों के छिपने के स्थान पर पहुंच गए।

श्री रनवंग शिमरा वामथेंग ने इस प्रकार अपने जीवन को गम्भीर संकट में डालकर असाधारण साहस, वीरता और देशभक्ति का परिचय दिया।

11. श्री हंगयो हेनरी,
ग्राम कैक जांग, पी० ओ० चासद,
ईस्ट डिस्ट्रिक्ट, मणिपुर।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 9 सितम्बर, 1980)

नौ और दस सितम्बर, 1980 की रात को मणिपुर में कांगपात नामक स्थान से कुछ बदमाश, .303 की 6 राइफलें और .303 के 235 कारतूस लेकर भाग गए। श्री हंगयो हेनरी की इस घटना की विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। श्री हेनरी तत्काल रवाना हो गए और 12 सितम्बर, 1980 को कांगपात पहुंचने पर इन्होंने अपने साथियों से आवश्यक जानकारी हासिल की और छापामार जो सामान पीछे छोड़ गए थे उसकी जांच की। एक "दाब" देखने पर इन्होंने तत्काल भांप लिया कि वह असंगखुलन गांव के आदिवासियों का है। इस पर श्री लालाओ के अधीन एक दल को लेकर ये उस गांव की ओर बढ़े। रास्ते में 13 सितम्बर, 1980 को सुबह इस दल ने एक महिला से .303 के 20 कारतूस बरामद किए जो उसे अपने खेत में मिले थे। असंगखुलन पहुंचने पर गांव को घेर लिया गया और गांव के सभी पुरुषों को लाइन में लगाया गया और अनुवर्ती कार्रवाई में उन पांच अपराधियों को पकड़ लिया गया। स्थानीय व्यक्ति के लिए यह बहुत बड़े साहस का काम है कि वह सब के सामने राष्ट्र विरोधी ऐजेन्टों की पहिचान कर उन्हें पकड़वाए। परन्तु श्री हेनरी ने इसमें बड़ी दृढ़ता और साहस का परिचय दिया।

श्री हेनरी के दल ने विद्रोहियों के दो खाली पड़े शिविरों को देखा और उन्हें नष्ट कर दिया। यह श्री हेनरी का ही दल था जिसने 25 सितम्बर, 1980 को उग्रवादियों से सम्पर्क स्थापित किया और दो उग्रवादियों को माक्लीग नदी पार करते हुए देखा। 7 अक्तूबर, 1980 से जो कार्रवाई शुरु की गई, उस में श्री हेनरी कांगपात दल के अग्रणी स्काउट थे। कांगपात से दोपहर बाद चलने पर ये उसी रात अपने दल को चोरी गांव ले आए। श्री पामथेंग सही जानकारी लेकर इनके दल को मिला। श्री हेनरी ने 8 अक्तूबर, 1980 की रात के दस बजे दस स्वयंसेवकों को लेकर सारी रात मार्च करते हुए और खोज करते हुए अगले दिन प्रातः चार बजे से पहले-पहले मुखिया, मन्त्री और दो अन्य विरोधियों के एजेन्टों को चौरीखुम गांव के पास पकड़ लिया।

9 अक्तूबर, 1980 को श्री हेनरी इन्हें पहले गांव से 5–6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित चोरोखुलान ले आए। इनसे पूछताछ करने पर पहले से मिली सूचना की पुष्टि हो गई और इनके दल ने तत्काल कार्रवाई आरम्भ कर दी। उग्रवादियों के छिपने पर धावा बोलने के लिए श्री हेनरी अपने दल तथा मार्गदर्शकों सहित आगे बढ़े। अपने दल सहित इन्होंने उग्रवादियों का पूरजोर पीछा किया और ऐसा करते हुए ये दल में सबसे आगे रहे और कार्रवाई में भाग लेने वाले व्यक्तियों के लिए ये महान प्रोत्साहन के प्रतीक थे। 2 अक्तूबर, 1980 से ये फिर से एक अन्य दल में शामिल हुए और खोज संबंधी कार्य 28 अक्तूबर, 1980 तक जारी रखा जिसके परिणामस्वरूप अवैध हथियार बरामद हुए।

श्री हंगयो हेनरी ने इस प्रकार अपने जीवन के लिए पैदा होने वाले खतरे की परवाह न करते हुए अनुकरणीय साहस और शूरवीरता का परिचय दिया।

12. स्क्वाड्रन लीडर अधिप बनर्जी (11592),
उड़ान (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 17 सितम्बर, 1980)

17 सितम्बर, 1980 को, स्क्वाड्रन लीडर अधिप बनर्जी (11592), उड़ान (पायलट), जो कि एक टेस्ट पायलट है, एक हन्टर वायुयान की परीक्षण उड़ान पर तैनात किए गए। उड़ान परीक्षण के बाद, 1000 फट पर बादलों के बीच से उतरने के दौरान, वायुयान की सामने की विंडशील्ड से एक गीध टकराया। इस टक्कर से कैनोपी टूट गई, जिससे धमाका हुआ और काकपिट के अन्दर का वायुदबाव कम होने लगा और हवा के बहुत तेज थपेड़े अन्दर आगे लगे। गीध विंडशील्ड में से अन्दर आकर सीधे इनके चेहरे पर जा टकराया। सौभाग्य से, उसकी टक्कर इनके वाइज़र और हेलमेट से हुई। गीध के खून व लीथड़ों से इनका वाइज़र और सामने की कैनोपी बुरी तरह से लिभड़ गई जिसके फलस्वरूप इनके लिए सामने का दृश्य पूर्ण रूप से अवरुद्ध हो गया था। ऐसी स्थिति में स्क्वाड्रन लीडर अधिप बनर्जी ने बड़ी सूझ-बूझ और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया और वायुयान को सुरक्षित अड्डे पर ले आए। इन्होंने तुरन्त ही यंत्रों का सहारा लिया जिन्हें वे बड़ी मुश्किल से ही देख पा रहे थे। क्योंकि ऊपर बादल थे और जमीन सिर्फ 1000 फुट नीचे थी, अतः वायुयान के संचालन के लिए अधिकतम उड़ान कुशलता और सहीपन का होना बहुत जरूरी था।

इन्होंने रफ्तार कम की और नीचे उतरने के दौरान वायुयान की सभी प्रणालियों को जांचा-परखा और दिमागी अंदाज़े से काम लिया। चूंकि हवा के थपेड़े आने से काकपिट में बहुत शोर हो रहा था, इसलिए स्क्वाड्रन लीडर बनर्जी ने वायुयान में हुए अनुमानित नुकसान से वायु यातायात नियंत्रण को सूचित किया और लैंडिंग के "फाइनल" पर हरा कारतूस दागने को कहा। रफ्तार को बहुत कम करने के बाद, बड़ी मुश्किल से वे अपनी आंखें खुली रख पा रहे थे और बड़ी कठिनता से रनवे को देखा और मूल्यवान वायुयान को नष्ट होने से बचाते हुए सुचारू रूप से वायुयान को नीचे उतार लाए।

स्क्वाड्रन लीडर अधिप बनर्जी ने अपनी सुरक्षा की जरा भी परवाह किए बिना वायुयान को सुरक्षित उतारा और इस प्रकार उच्चकोटि की उड़ान कुशलता और सूझ-बूझ का परिचय दिया।

13. स्क्वाड्रन लीडर ओम प्रकाश शुगल (9532)
उड़ान (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 18 सितम्बर 1980)

स्क्वाड्रन लीडर ओम प्रकाश शुगल (9532) उड़ान (पायलट) को कुल मिलाकर लगभग 2700 घंटे की उड़ानें भरने का श्रेय प्राप्त है। इनमें से 740 घंटों की उड़ानें तो केवल मंक्रिया-त्मक ही हैं।

18 सितम्बर 1980 को स्क्वाड्रन लीडर ओम प्रकाश शुगल को दो इंजिन वाले परिवहन वायुयान की उड़ान करके पूर्वी सैक्टर की एडवान्स लैंडिंग ग्राउण्ड (ए० एल० जी०) में से एक पर वायु अनुरक्षण सप्लाई लैंडिंग सार्टी के लिए भेजा गया। ए० एल० जी० से उड़ान भर कर बेस के लिए लौटते समय उनके वायुयान का स्टारबोर्ड इंजिन बिना किसी पूर्व चेतावनी या संकेत दिए बन्द हो गया। वे तत्काल ए० एल० जी० की ओर एमर्जेन्सी लैंडिंग के लिए मुड़े और साथ ही साथ उन्होंने इंजिन के बन्द होने के संभावित कारण जानने के प्रयास किए। अभी वे इस संकट से उभरे ही थे कि पोर्ट इंजिन में बहुत ज्यादा बैक फायर शुरु हो गया जिससे ऊर्जा का ह्रास होने लगा। ऐसी परिस्थितियों में उनके पास ए० एल० जी० तक पहुंचने के लिए जितने समय तक संभव हो सके उतने समय के लिए पोर्ट इंजिन की अव्यवस्थित ऊर्जा पर निर्भर होने के अतिरिक्त और कोई चारा न था। पोर्ट इंजिन में गड़बड़ी होने के कारण उन्हें इसे अन्ततः बन्द करना पड़ा। कोई अन्य विकल्प न होने पर उन्होंने स्टारबोर्ड इंजिन को फिर से चालू कर दिया। दुर्गम भू-भाग तथा घने जंगल से घिरी हुई ए० एल० जी० पर सफल एमर्जेन्सी लैंडिंग करने के लिए उन्होंने चालू इंजिन से जो कुछ भी ऊर्जा प्राप्त हो सकती थी, उसका उपयोग किया। क्रेश लैंडिंग से वायुयान पूर्ण रूप से ध्वस्त हो जाता और उसमें सवार सभी व्यक्तियों की मृत्यु निश्चित थी। सवार व्यक्तियों में नौ यात्रियों के साथ चालदल भी शामिल था।

अत्यधिक बैक फायर तथा स्टारबोर्ड इंजिन से अव्यवस्थित ऊर्जा उपलब्ध होने के कारण ए० एल० जी० पर उतरने के लिए चिन्ताजनक घड़ियों के दौरान दिशा पर नियंत्रण बनाए रखना अत्यन्त कठिन हो गया। दुर्घटना के समीप होने पर भी स्क्वाड्रन लीडर शुगल अविचलित रहे और धैर्य का परिचय देते हुए उन्होंने परिस्थितियों पर सराहनीय रूप से नियंत्रण बनाए रखा और ऊर्जा का प्रायः पूर्ण रूप से ह्रास होने पर लैंडिंग के अन्तिम चरण में बड़े कुशल ढंग से फ्लैप्स का सहारा लेते हुए सफलता पूर्वक लैंडिंग की।

स्क्वाड्रन लीडर ओम प्रकाश शुगल ने इस प्रकार असाधारण शान्त मनोदशा, उत्कृष्ट एयरमैनशिप और अनुकरणीय साहस का परिचय दिया।

14. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रकाश धुलप्पा नवाले (13602)
उड़ान (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 20 सितम्बर, 1980)

20 सितम्बर 1980 को फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रकाश धुलप्पा नवाले (13602), उड़ान (पायलट), को एक विशिष्ट व्यक्ति को, उड़ीसा के बाढ़ग्रस्त क्षेत्र और उसके आसपास की हैलिकाप्टर से टोह लगवाने की जिम्मेदारी सौंपी गई। गुनपुर में उतरने के बाद, विशिष्ट व्यक्ति हैलिकाप्टर के आसपास इकट्ठे लोगों से बातचीत में लग गए। इस बीच भीड़ के एक वर्ग ने उनके विरुद्ध नारेबाजी शुरु कर दी। भीड़ में उत्तेजना ने जोर पकड़ा और उपद्रवी चारों तरफ से उस विशिष्ट व्यक्ति की ओर बढ़े। फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट नवाले ने सामने मंडराते हुए अवश्यंभावी खतरे को भांप लिया, और अपनी सुरक्षा की जरा भी परवाह किए बिना भीड़ को चीर कर लांघते हुए, विशिष्ट व्यक्ति तथा हैलि-काप्टर को पीठ के पीछे करके दोनों के मध्यस्थ दीवार की तरह खड़े हो गए। उपद्रवियों ने न सिर्फ फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट नवाले के साथ हाथापाई की बल्कि उन्हें और विशिष्ट व्यक्ति को हैलिकाप्टर से दूर धकेल ले गए। हैलीकाप्टर को भी नुकसान पहुंचाया।

भीड़ का गुस्सा शान्त होने पर, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट नवाले और विशिष्ट व्यक्ति वापस आए। उन्होंने शीघ्र ही नुकसान का जायजा लिया। जब वे ऐसा कर रहे थे तो एक उपद्रवकारी ने उनसे हैलिकाप्टर से चले जाने और विशिष्ट व्यक्ति को पीछे छोड जाने के लिए कहा। उन्होंने मौके का फायदा उठाया और उड़ निकले। उन्होंने तत्काल हैलिकाप्टर जमीन पर उतारा और विशिष्ट व्यक्ति को साथ लिया और उन्हे उड़ा कर गोपालपुर सुरक्षित ले गए।

यदि फ्लाइट लेफ्टिनेट नवाले उस विशिष्ट व्यक्ति को उस संकट की घड़ी मे उड़ा कर न ले गए होते तो परिस्थिति गम्भीर मोड़ ले सकती थी जिसके परिणामस्वरूप उस विशिष्ट व्यक्ति के साथ कुछ भी गम्भीर घटना हो सकती थी और कानून व व्यवस्था की स्थिति और भी ज्यादा बिगड़ सकती थी।

इस कार्रवाई मे फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट प्रकाश धुलप्पा नवाले ने दृढ़ निश्चय, साहस, सूझ-बूझ तथा उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

15. जे० सी० 87532 सूबेदार करनैल सिंह, जाक राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 22 अक्तूबर, 1980)

22 अक्तूबर, 1980 को इस बात की विश्वसनीय सूचना मिलने पर कि गैरकानूनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पी० एल० ए०) के एक प्रमुख नेता इम्फाल क्षेत्र में एक सभा करने वाले हैं तो इस पर जाक राइफल्स के जे० सी० 87532 सूबेदार करनैल सिंह को एक विशेष मिशन का नेतृत्व करने के लिए तैनात किया गया। उन्होंने योजना बनाई और अपने दल सहित उस क्षेत्र की निगरानी करने के लिए निकल पड़। रास्ते मे एक आदमी को सदेहात्मक स्थितियों में घूमते हुए देखकर उन्होंने एक और जवान को साथ लेकर उस आदमी का पीछा किया। संदिग्ध व्यक्ति पहले से ही चौकस हो गया था और उसने पिस्तौल दिखा कर भागने की चेष्टा की लेकिन सूबेदार करनैल सिंह ने उस उग्रवादी को दबोच लिया और उसे निरस्त्र कर दिया। बाद में शिनाख्त करने पर वह उग्रवादी गैरकानूनी पी० एल० ए० का सेकेण्ड-इन-कमांड चिरोम रणजीत सिंह निकला, जिसे पकड़ने के लिए एक नगद पुरस्कार की घोषणा की जा चुकी थी।

इसके बाद, 26 नवम्बर, 1980 को सूबेदार करनैल सिंह को इम्फाल सड़क पर आने-जाने वालों की पड़ताल के लिए तैनात किया गया। जिस समय यह दस्ता पैदल यात्रियों और साईकिल चालकों की तलाशी ले रहा था तो एक साइकिल चालक ने तलाशी लेने वाले पर गोली चलायी। सूबेदार करनैल सिंह ने तुरत बढ़कर अपनी करबाइन से गोली चला कर उस साइकिल चालक को तत्क्षण धराशायी कर दिया। बाद में उस आदमी की पहचान करने पर वह पी० एल० ए० का एक कट्टर सदस्य निकला।

शूरवीरता के इन कार्यों में जे० सी० 87532 सूबेदार करनैल सिंह ने दृढ़ता, परम कर्त्तव्यपरायणता, नेतृत्व और सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल उच्च कोटि के साहस का परिचय दिया।

16. जी० 106874 अधीक्षक भवन तथा सड़क निर्माण ग्रेड-I वेलैयानाडार पैरीवन्दवार।

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 13 दिसम्बर, 1980)

अक्तूबर, 1980 से दिसम्बर, 1980 के दौरान 160 फार्मेशन कटिंग प्लाटून (जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स) के जी०/106874 अधीक्षक भवन तथा सड़क निर्माण, ग्रेड-1, वेलैयानाडार पैरीवन्दवार लाहौल घाटी मे संसारी कीलर-थिरोट सड़क पर फार्मेशन कटान कार्य के कार्य प्रभारी अफसर के रूप में कार्य कर रह थे। वे वहां जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स के 100 कार्मिकों तथा 400 नैमित्तिक मजदूरों का कार्य देख रहे थे।

1 दिसम्बर, 1980 को 27वें किलोमीटर पर चट्टान फिसलने के कारण एक मजदूर मारा गया था। इस दुर्घटना के कारण कर्मचारियों के मन में भय बैठ गया और वहां काम ठीक ढंग से नहीं हो पा रहा था। श्री वेलैयानाडार पैरीवन्दवार ने स्वयं काम करके अपने कर्मचारियों मे विश्वास पैदा कर उन्हें काम करने के लिए प्रेरित किया। 13 दिसम्बर, 1980 को दुर्भाग्यवश 200 फुट ऊपर से अचानक एक चट्टान नीचे को फिसलने लगी। उसे देखत ही उन्हें अपने कर्मचारियो की चिन्ता हुई और उन्होंने उन्हें सुरक्षित स्थान पर चले जाने का आदेश दिया। सभी व्यक्ति सुरक्षित स्थानों की ओर चले गए और इस भारी स्खलन का उन पर कोई प्रभाव न पड़ा। किन्तु अपने साथियों की सुरक्षा में लगे रहने के कारण श्री वेलैयानाडार पैरीवन्दवार अपनी सुरक्षा का समय गंवा बैठे। उनके ऊपर भारी मात्रा मे चट्टान का मलबा गिर पड़ा और वे उसके नीचे दब गए। जब प्लाटून के कार्य प्रभारी अफसर घटनास्थल पर पहुंचे तो उन्हें अंतिम सांस लेते हुए पाया।

श्री वेलैयानाडार पैरीवन्दवार ने इस प्रकार साहस, दृढ़ और निश्चय और बहुत ही उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

17. 293066 कारपोरल दर्शन सिंह बरार वर्कशाप फिटर (सी)।

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि: 25 जनवरी, 1981)

25 जनवरी 1981 को, कारपोरल दर्शन सिंह बरार, वर्कशाप फिटर (सी) पत्नी सहित, अपनी साली के विवाह पर भटिण्डा जाने के लिए कालका-फिरोजपुर माल गाड़ी पर सवार हुए। रात को लगभग 1-15 बजे, जब गाडी बरनाला रेलवे स्टेशन से चली तो तीन गुण्डे कारपोरल बरार के डिब्बे में घुस आए। उनमें से दो के पास चाकू थे और तीसरे के पास देसी पिस्तौल थी। लुटेरों ने यात्रियों को जगाना शुरू कर दिया और उन से उनके पास सारी कीमती चीजें और नकदी सौंपने को कहा। गुण्डों में से एक ने कारपोरल बरार तथा उनकी पत्नी को जगाया और चाकू दिखा कर धमकाते हुए उन से सारी कीमती चीजें तथा नकदी दे देने के लिए कहा।

दूसरे यात्रियों की तरह गुण्डों की धमकियों के आगे झुकने के बजाय, कारपोरल बरार ने निडरता से उनका मुकाबला किया और उनसे भिड़ गये। निहत्थे होते हुए भी, कारपोरल बरार ने एक डाकू को पकड़ लिया और बाकी यात्रियों को ललकारा कि वे भी उठकर डाकुओं का निर्भीकता से मुकाबला करें। दुर्भाग्य से, डिब्बे में डर के मारे, कोई भी यात्री आगे न आया और कारपोरल बरार अकेला ही लड़ता रहा। जिस समय वह एक डाकू को दबोचने वाले ही थे, तो उस डाकू की पुकार सुनकर उसका पिस्तौलधारी साथी लड़ाई में आ शामिल हुआ और उसने बहुत ही करीब से कारपोरल बरार पर गोली चला दी। कारपोरल बरार गिर पड़े और उसी समय उनकी मृत्यु हो गई।

डाकुओं के विरुद्ध कारपोरल दर्शन सिंह बरार द्वारा दर्शाया गया साहस तथा वीरता पूर्ण द्वन्द केवल आत्मरक्षा के लिए ही नहीं था बल्कि दूसरे यात्रियों को बचाने के निमित्त भी था और अन्त में उनका बलिदान सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप है।

18. जी० 97871 खुदाई मशीन प्रचालक रावेल सिंह।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 5 फरवरी, 1981)

24 जनवरी, 1981 से 8 फरवरी, 1981 के बीच जम्मू से श्रीनगर को जाने वाले राष्ट्रीय मार्ग 'ला' पर, 135 किलो मीटर और 212 कि० मि० के बीच के हिस्से में भारी बर्फ पड़ी जिसकी वजह से बहुत सी जगहों पर पहाड़ खिसक गए और फिसली बर्फ के ढेर लग गए। जी 97871 खुदाई मशीन प्रचालक रावेल सिंह को 136 किलोमीटर और 180 किलोमीटर के बीच डोजर से बर्फ हटाने के लिए तैनात किया गया। 5 फरवरी, 1981 को दोपहर दो बजे के आसपास उस क्षेत्र में हिम स्खलन से छः-छः मीटर की ऊंचाई के ढेर लग गए। इससे सड़क बंद हो गई और करीब 100 बसें /सिविल ट्रक और श्रीनगर से जम्मू जाने वाली सेना की कानवाई उस हिम स्खलन क्षेत्र के दोनों ओर अटक गई। बर्फ के इन ढेरों को हटाने का चुनौती भरा कार्य जी० 97871 रावेल सिंह को सौंपा गया। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की जरा भी परवाह न करते हुए बड़ी क्षमतापूर्वक सतत कार्यरत रहने से करीब शाम के साढ़े सात बजे तक उन्होंने लगभग 80 प्रतिशत बर्फ साफ कर दी। उनके कार्य करने के स्थल से ऊपरी ढलानों से अचानक हिम स्खलन हुआ और वे अपने डोजर सहित बर्फ में दब गए। इस दुर्घटना के फलस्वरूप वे घायल भी हो गए और अगर जम्मू कश्मीर की यातायात पुलिस कुछ सिविलियन अधिकारी और आम जनता बर्फ के ढेर में से उन्हें खींचकर बाहर नहीं निकालते और तुरंत बनिहाल अस्पताल में नहीं पहुंचा देते तो शायद उनकी मृत्यु हो जाती।

जी० 97871 खुदाई मशीन प्रचालक रावेल सिंह ने इस प्रकार साहस और उच्च कोटि के कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया

19. श्री मोहम्मद फजरूल रहमान,
मस्जिद रोड, पश्चोना बाजार, इम्फाल।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 24 अप्रैल, 1981)

24 अप्रैल, 1981 को लगभग 11-15 बजे जब श्री मोहम्मद फजरुल रहमान "मुस्लिम ग्रैण्ड होटल" नामक अपने रेस्टोरेंट से ग्राहकों से पैसे ले रहे थे तो वहां हथियारों से लैस चार लुटेरे घुस आए। जब उनमें से एक बाहर मुख्य दरवाजे पर तैनात हो गया तो दूसरे ने ग्राहकों तथा कर्मचारियों को बन्दूक की नोक पर अपनी जगह से न हिलने का आदेश दिया। बाकी दो लुटेरे कैश कांउटर की ओर दौड़े। श्री रहमान के सिर के ऊपर पिस्तौल की नाल रख कर उन्होंने श्री रहमान की सारी नकदी सुपुर्द करने को कहा पर श्री रहमान उन हथियार-बंद बदमाशों से भिड़ गए और एक को जमीन पर पटक दिया। यह देखकर दूसरे बदमाश ने गोली चला दी जिससे मोहम्मद अलाउद्दीन नामक व्यक्ति घायल हो गया। श्री रहमान को जबरदस्त मुकाबला करते देख कर लुटेरे भयभीत हो गए और अपने एक साथी को छोड़कर वहां से भाग निकले। श्री रहमान द्वारा पटके गए लुटेरे को निरस्त्र कर दिया गया और उससे पांच कारतूसों सहित एक भरी हुई पिस्तौल बरामद की गई। बाद में शिनाख्त करने पर वह लुटेरा मणिपुर के उग्रवादी संगठन का सदस्य सोराइसाम इनाओबा सिंह निकला।

श्री मोहम्मद फजरूल रहमान ने इस प्रकार साहस और वीरता का परिचय दिया।

30. कैप्टन रणजीत सिंह देव (आई० सी०-24238)
आर्टिलरी, एयर आब्जरवेशन पोस्ट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि: 26 मई, 1981)

24 मई, 1981 को सूचना मिली कि ननकुन चोटी से कुछ ही सौ फुट नीचे लगभग 6300 मीटर की ऊंचाई पर जापानी पर्वतारोही अभियान दल के कुछ सदस्य गंभीर रूप से बीमार थे। 25 मई, 1981 को हैलीकाप्टर उतारने के अनेक प्रयास किए गए परन्तु ऊंचाई बहुत ज्यादा होने के कारण उतरने के प्रयास छोड़ने पड़े।

26 मई, 1981 को यह काम कैप्टन रणजीत सिंह देव को सौंपा गया। उन्होंने सह-पायलट के रूप में कैप्टन पी० सी० भण्डारी को साथ लिया और श्रीनगर हवाई अड्डे से सुबह 5-30 बजे ननकुन के लिए उड़ान भरी। उस क्षेत्र में पहुंचने पर कैप्टन देव ने देखा कि उन्हें 23,800 फुट की ऊंचाई पर दो पहाड़ियों के बीच बर्फ से ढके छोटे से एकदम अनुपयुक्त तल पर उतरना होगा। यह स्थान विमान के लिए निर्धारित अधिकतम ऊंची उड़ान की सीमा से भी 800 फुट अधिक ऊंचाई पर था। यहां गहरी बर्फीली खाइयां थीं जो छिदरी बर्फ से ढकी हुई थीं। यह देखते हुए कि अगर हैलीकाप्टर की उड़ान एक ही पायलट भी करे तो भी विमान में नाममात्र की ऊर्जा शेष रहेगी, उन्होंने अपने सहपायलट को एक अग्रिम आधार चौकी पर उतार दिया। फिर वहां से चुनौती से भरी हुई मिशन के लिए अकेले ही उड़ान भरी और सब खतरों की जानकारी रखते हुए भी गम्भीर रूप से बीमार पर्वतारोहियों को निकाल लाने के लिए चल दिए।

मेघों से आच्छादित आकाश, विप्लवकारी मौसम और बर्फ से ढके हुए भाग इस मिशन को अत्यधिक खतरनाक बना दे रहे थे। कई प्रयासों के बाद बीमार व्यक्तियों का पता लगाकर कैप्टन देव ने जुड़वा चोटियों के बीच एक छोटे से स्थान पर हैलीकाप्टर उतारा। जैसे ही हैलीकाप्टर उतरा थके मांदे पर्वतारोही अपने बेहोश साथी को तम्बू से बाहर खींच लाए। काफी कोशिश करने पर पहला बीमार व्यक्ति हैलीकाप्टर में चढ़ाया जा सका। फिर इन्होंने उड़ान भरी और अग्रिम आधार शिविर से अपने सह-पायलट को साथ लेकर बहुत थोड़ा सा पेट्रोल बचने पर कारगिल में उतरे।

कैप्टन देवा ने शेष बचे पर्वतारोहियों को बचाने केलिए पुनः उड़ान भरी। तापमान बढ़ जाने से ऊंचाई पर बर्फ का घनत्व और बढ़ गया और इसने पहले से ही खराब मौसम को और अधिक विप्लवकारी बना दिया। बाद की दो उड़ानों में ये उसी जगह पर उतरे और बाकी बचे पर्वतारोहियों को उनके उपस्करों के साथ सम्मिलित ले आए।

कैप्टन रणजीत सिंह देव ने इस प्रकार उच्च कोटि की व्यावसायिक कार्य कुशलता, दृढ़ निश्चय, साहस और कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

21. लेफ्टिनेंट ओम प्रकाश सिन्धू (01591-आर०) आई० एम०।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि: 6 जून, 1981)

6 जून, 1981 की शाम को लगभग 6-50 बजे समस्तीपुर से बनमुखी जाने वाली भाग्यहीन 416 डाऊन यात्री गाड़ी बागमती नदी में गिर गई। दुर्घटना स्थल पर धारा प्रवाह अत्यन्त तीव्र था और पानी गंदला एवं गहरा था, जिसके कारण पानी के बीच कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। भारतीय नौसेना को डूबे हुए मलबे में से दुर्घटनाग्रस्त व्यक्तियों के शवों को अत्यन्त शीघ्रता से निकालने का जोखिमपूर्ण कार्य और नदी के गहरे तल में दबी हुई बोगियों को बरामद करने का कार्य सौंपा गया।

लेफ्टिनेन्ट ओम प्रकाश सिन्धू (01591-आर०) को जलमग्न बोगियों का पता लगाने और उनमें फंसे शवों को निकालने का कार्य सौंपा गया था। गोता लगाने की अत्यन्त जोखिम भरी परिस्थितियों में तथा फंसे हुए मलबे से व्यक्तिगत सुरक्षा को भारी खतरा होने के बावजूद इन्होंने पानी के अन्दर निरक्षण करने एवं मलबे का पता लगाने के लिए आरंभिक गोताखोरी की। इन्होंने स्वयं भारी खतरे का सामना करते हुए अनुकरणीय दृढ़ता के साथ लगातार गोताखोरी की ताकि इनके दल को कम खतरे का सामना करना पड़े। इनके क्रियाशील तथा प्रेरक नेतृत्व और कुशल संगठन में इनका दल दो जलमग्न बोगियों का पता लगाने और उनके वास्तविक स्थल को ज्ञात करने में सफल हुआ।

लेफ्टिनेन्ट ओम प्रकाश सिन्धू ने इस प्रकार वीरता, दृढ़ता, कर्त्तव्यपरायणता और प्रेरक नेतृत्व का परिचय दिया।

22. जं० ओ०—एन० वाई० ए० सहायक इंजीनियर (सिविल)

किझाकेथिल राघवन पिल्लै जयप्रकाशम।

(मरणोपरांत))

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि: 19 जून, 1981)

नागालैण्ड में संचार की महत्वपूर्ण कड़ी चेनसांग मोन-नगिरोमारा मार्ग पर निर्माण कार्य हो रहा था। संचार व्यवस्था में सुधार करने के लिए इस मार्ग के 71वें किलोमीटर पर (उक्का के निकट एक कैम्प लगाना आवश्यक था। यह इलाका भूमिगत विरोधियों से भरपूर था और कोई भी अधिकारी इस कैम्प का चार्ज लेने के लिए स्वतः तैयार नहीं था। जोखिमों को भली प्रकार जानकारी रखने पर भी जी० ओ०-एन० वाई ए० सहायक इंजीनियर (सिविल) किझाकेथिल राघवन पिल्लै जयप्रकाशम ने जनवरी, 1980 में स्वेच्छा से यह कार्यभार सम्भाल लिया। उनके इस व्यक्तिगत उदाहरण से प्रोत्साहित होकर अन्य कार्मिक तथा कैजुअल मजदूर भी इस कैम्प में काम करने के लिए तैयार हो गए।

अपनी जान की जरा भी परवाह किए बिना श्री जय प्रकाशम पूरी तरह से अपने काम में जुट गए। उन्हें सौंपे गए स्टोर और सामान की सुरक्षा का उन्होंने विशेष ध्यान रखा ताकि ये विरोधियों के हाथ न लगने पाएं। उनके साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता से प्रेरित होकर अन्य कार्मिकों ने भी उन्हीं की तरह कार्य किया।

19 जून, 1981 की रात को स्वचालित शस्त्रों से लैस विरोधियों का एक दल, जो बहुमूल्य सामान तथा विस्फोटकों को लूटना चाहता था, कैम्प में घुस आया और श्री जयप्रकाशम के कमरे का दरवाजा तोड़ कर बहुत पास से उन पर गोली मार दी।

श्री किझाकेथिल राघवन पिल्लै जयप्रकाशम ने इस प्रकार अदम्य साहस, उत्कृष्ट वीरता तथा अति उच्च कोटि की कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

23. जी०/44427 ड्राइवर मैकेनिकल इक्विपमेंट नच्छित्तर सिंह।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि: 20 जून, 1981)

अगस्त, 1978 में भागीरथी नदी में अभूतपूर्व बाढ़ आ जाने से ऋषिकेश-जोशीमठ मार्ग पर गगनानी से डबरानी तक की सड़क बह गई। अतः यह जरूरी हो गया कि नदी के बाएं किनारे नई सड़क बनाई जाए। निर्माण कार्य के लिए नदी की तीव्र धारा में एक डोजर दूसरे किनारे पर लेजाना था और इससे आपरेटर सहित डोजर के बह जाने का खतरा था।

परिस्थितियां पूरी तरह प्रतिकूल होने और अपनी जान के लिए खतरे के बावजूद जी/44427 ड्राइवर मैकेनिकल इक्विपमेंट नच्छित्तर सिंह ने 20 जून, 1981 को स्वेच्छा से इस जोखिमपूर्ण कार्य को करने का जिम्मा उठाया। नदी की तेज धारा से बह जाने से बचने के लिए श्री नच्छित्तर सिंह ने अपनी कमर को रस्सी से बांधा और डोजर लेकर नदी में घुस गए। मध्य धारा में जाकर डोजर रुक गया और बड़े

खतरनाक ढंग से नीचे की ओर बहने लगा। परन्तु श्री नच्छित्तर सिंह ने बड़ी सूझ-बूझ और उत्कृष्ट कार्य कुशलता का परिचय दिया और डोजर को युक्तिपूर्ण ढंग से नदी के पार ले जाने में सफल हुए। नदी पार होने पर डोजर को एक संकरी और सीधी ढाल पर ऊपर लेजाना था। सीधी ढाल पर एक मोड़ काटते हुए डोजर एक किनारे पर खतरनाक ढंग से झुक गया। परन्तु श्री नच्छित्तर सिंह अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए डोजर को वहां से युक्तिपूर्ण ढंग से निकालने में सफल हो गए।

इस कार्यवाही में ड्राइवर मैकेनिकल इक्विपमेंट नच्छित्तर सिंह ने अदम्य साहस, सूझ-बूझ और उच्च कोटि की कर्तव्य परायणता का परिचय दिया।

24. जे० सी० 130106 सूबेदार धरम सिंह कंडारी,
असम राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 22 जून, 1981)

22 जून, 1981 को असम राइफल्स की एक प्लाटून की अपनी कमान में साथ लेकर एक पैदल बटालियन ने विरोधियों की बर्मा से नागालैंड और नागालैंड से बर्मा में घुसपैठ रोकने के इरादे से भारत-बर्मा सीमा को बन्द करने की योजना बनायी। असम राइफल्स के सूबेदार धरम सिंह कंडारी एक कालम के प्लाटून कमाण्डर थे।

लगभग 06.45 बजे, करीब 100 नागा विरोधियों ने दिन दहाड़े जान-बूझकर और दुस्साहस के साथ उनकी मुख्य चौकी पर हमला कर दिया। भारी गोली वर्षा की आवाज़ सुनकर इन्होंने तुरन्त अपने कमान अफसर से सम्पर्क किया और उन्हें इस हमले के बारे में बताया। सूबेदार कंडारी ने बड़ी तेजी के साथ अपनी प्लाटून का नेतृत्व किया और उनके बच कर भागने के सभी संभव रास्ते बंद कर दिए।

लगभग साढ़े दस बजे करीब 20 विरोधी सूबेदार कंडारी की घात में आ फंसे। इनके बहादुर जवानों ने विरोधियों पर नजदीक से गोलियां दागनी शुरू कर दी और उनके कई आदमियों को घायल कर दिया। सूबेदार कंडारी ने राइफलमैन तेजसिंह और राइफलमैन दामर बहादुर के साथ घनी झाड़ियों से होकर भागने वाले विरोधियों का तुरंत पीछा करके करीब दस विरोधियों से आगे निकल कर उन्हें घेर लिया। सूबेदार कंडारी ने अपने 2 साथियों को दो तरफ से विरोधियों पर फायर करते रहने का हुक्म दे दिया और खुद अपनी जान की जरा भी परवाह किए बिना घनी झाड़ियों की ओट में से रेंगते हुए बढ़े और घमासान हाथापाई के बाद उन्होंने 7.62 मिलीमीटर की अर्धस्वचालित राइफल और 50 गोलियों सहित एक विरोधी को पकड़ लिया। इसी बीच विरोधियों का एक और दल उस क्षेत्र में पहुंच गया और सूबेदार कंडारी और उसके आदमियों पर चारों तरफ से स्वचालित राइफलों और राकेटों से फायर करने लगा। सूबेदार कंडारी ने बड़ी सूझ-बूझ से काम लिया और पकड़े गए विरोधी को ठोकर मार कर बेहोश कर दिया और खुद रेंग कर वहां पहुंच गए जहां से एक दूसरा विरोधी उन पर बड़े नजदीक से फायर कर रहा था। सूबेदार कंडारी ने जान की बाजी लगाकर दिखाए गए इस साहस से प्रेरित होकर इनके दूसरे साथी भी विरोधियों की तरफ रेंगकर बढ़ने लगे और हरेक ने काफी नजदीक की भिड़ंत में हथियारों और गोलियों सहित एक एक शत्रु को अपने कब्जे में ले लिया।

सूबेदार धर्म सिंह कंडारी ने इस सम्पूर्ण कार्रवाई के दौरान पहल शक्ति, सूझ-बूझ, साहस, अनुकरणीय नेतृत्व और अति उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

25. 132979 राइफलमैन दामर बहादुर,
असम राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 22 जून, 1981)

22 जून, 1981 को एक इन्फैन्ट्री बटालियन ने असम राइफल्स की एक प्लाटून के साथ मिलकर, नागालैंड से लगी सीमा को बन्द करने की कार्रवाई की योजना बनाई ताकि उस रास्ते भारत से बर्मा और बर्मा से भारत में घुसपैठ करते रहने वाले विरोधियों को पकड़ा जा सके। राइफलमैन दामर बहादुर असम राइफल्स की उस प्लाटून का सदस्य था जिसकी सूबेदार धर्म सिंह कंडारी कमान कर रहे थे। लगभग 0645 बजे उन्हें अपनी मुख्य चौकी की तरफ से भारी गोलाबारी की आवाज सुनाई दी जिस पर लगभग 100 विरोधियों ने हमला कर दिया था। राइफलमैन दामर बहादुर अपने साथियों को साथ लेकर तेजी से उधर बढ़े ताकि विरोधियों के बर्मा भाग जाने के सभी संभव रास्तों की नाकाबन्दी की जा सके। लगभग 10.30 बजे 20 विरोधियों की उनसे मुठभेड़ हो गई। विरोधियों ने राइफलमैन दामर बहादुर और उसके साथियों पर गोलाबारी शुरू कर दी और घनी झाड़ियों से छुपते-छुपते भाग निकले। बिना घबराए राइफलमैन दामर बहादुर और उनके साथियों ने विरोधियों का पीछा किया और आधा घंटा लगातार पुनजोर पीछा करके उन तक पहुंच गए। फिर आमने-सामने की हाथों-हाथ हुई भड़प में राइफलमैन दामर बहादुर ने निर्भीकितापूर्ण गुत्थमगुत्था में एक विरोधी को राकेट सहित दबोच लिया।

राइफलमैन दामर बहादुर ने पूरी कार्रवाई के दौरान पहल-शक्ति, सूझ-बूझ, साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

26. फ्लाइंग अफसर जानकीरमन बालासुब्रामनियम (15558), उड़ान (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 26 अगस्त, 1981)

फ्लाइंग अफसर जानकीरमन बालासुब्रामनियम (15558), उड़ान (पायलट) ने पूर्वी सैक्टर में विमान-पातन सार्टी के लिए 26 अगस्त, 1981 को उड़ान भरी। यह पातन जोन दक्षिणी जोनों में से सबसे निचले पातन जोनों में से एक था। उड़ान, वायुयान के पातन जोन तक पहुंचने तक घटना रहित थी। पातन के लिए उसकी पहली ही उड़ान पर फ्लाइंग अफसर बालासुब्रामनियम ने बाएं इंजिन के पीछे से होने वाली फायरिंग की ऊंची आवाजें सुनीं और इसके बाद तेज कम्पन

हुआ और धुआं निकलने लगा। फ्लाइंग अफसर बालासुब्रामनियम ने तुरन्त अपने इंजिन के उपकरणों की जांच की और बांए इंजिन के बन्द हो जाने की पुष्टि कर ली। उन्होंने उड़ान की इस खतरनाक अवस्था में न केवल वायुयान को ही नियंत्रण में रखा बल्कि शांतचित रहकर विश्वासपूर्ण और साहसी ढंग से अपने वायुयान को सामने की पहाड़ी से भी बचाया और इसके साथ-साथ बाएं इंजिन को बन्द भी कर दिया फ्लाइंग अफसर बालासुब्रामनियम ने पाया कि उनका वायुयान एक इंजिन पर उंचाई नहीं प्राप्त कर पा रहा था। उन्होंने तेजी से भार को निकाल दिया और अत्यन्त अपेक्षित 500 फुट की ऊंचाई प्राप्त की जो कि बचाव के लिए उड़ान के रास्ते को कम से कम ऊंचाई थी। अपने चालू इंजिन के तापमान पर बाज की दृष्टि की तरह नजर रखते हुए और प्रचण्ड प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हुए उन्होंने आपद्ग्रस्त वायुयान को एक ही इंजिन के सहारे पहाड़ी भू-भागों पर एक घंटे से अधिक उड़ाए रखा। इस तरह वे वायुयान को बेस तक लाने में सफल हुए और नितान्त सही लैंडिंग की।

फ्लाइंग अफसर जानकीरमन बालासुब्रामनियम ने अपनी केवल 270 घंटों की उड़ान के अनुभव के साथ इस गंभीर आपात स्थिति को अनुकरणीय और व्यवसायिक ढंग से नियंत्रित किया और इस प्रकार वायुयान में सवार आठ बहुमूल्य जानें बच गईं।

27. 67001880 नायक तुल बहादुर छेत्री,
सीमा सुरक्षा बल। (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 8 अक्तूबर, 1980)

67001880 नायक तुल बहादुर क्षेत्री, मणिपुर राज्य के ईस्ट डिस्ट्रिक्ट में अंतर्राष्ट्रीय सीमा की एक चौकी पर सीमा सुरक्षा बल की कम्पनी के सैक्टर कमांडर थे। 6 अक्तूबर, 1980 को नायक तुल बहादुर छेत्री को सेना की कमान में सीमा सुरक्षा बल और विलेज वालिन्टियर फोर्स के एक मिले-जुले गश्ती दल के साथ भेजा गया जिसे टोह लेने और अंतर्राष्ट्रीय सीमा के आस पास घात लगाते हुए "पीपुल्स लिबरेशन आर्मी" के आदमियों को नष्ट करने का काम सौंपा गया था 8 अक्तूबर, 1980 को उस क्षेत्र में एक पीपुल्स लिबरेशन आर्मी कैम्प के होने की पक्की खबर मिलने पर कमांडर ने वहां पर छापामार पार्टी और चार रोक लगाने वाले दल भेजे। नायक तुल बहादुर के पास एक स्वचालित राइफल थी और उन्हें रोक लगाने वाले एक दल के साथ भेजा गया। दोपहर बाद लगभग सवा तीन बजे पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के करीब 15 व्यक्ति इस दल के सामने आए। नायक तुल बहादुर छेत्री ने पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के व्यक्तियों को सबसे पहले देखा और इससे पहले कि वे कोई कार्रवाई करते नायक छेत्री ने गोली चलाई और उनमें से दो को धराशायी कर दिया। तीस मिनट से अधिक समय तक दोनों ओर से लगातार भारी गोलाबारी होती रही और उसके बाद पीपुल्स लिबरेशन आर्मी ने गोला बारी बन्द कर दी। यह सोचते हुए कि पीपुल्स लिबरेशन आर्मी को ऊंचे स्थान पर होने के कारण आक्रमण का लाभ मिल रहा है, इन्होंने और ऊंचे स्थान पर कब्जा करने की ठानी ताकि स्वयं उनसे अच्छी स्थिति में हो सकें। शत्रु की किसी तरह कुछ पता न चले इस बात को ध्यान में रखते हुए ये अपने तीन साथियों को लेकर धीरे-धीरे छिपकर आगे बढ़े। ज्योंही ये एक बड़े वृक्ष तक पहुंचे कि अचानक इन्होंने कुछ गतिविधियां देखीं और उसके तत्काल बाद इन पर स्वचालित राइफल से सिंगल राउंड फायर किया गया। और अधिक समय न खोकर इन्होंने एक राष्ट्र-विरोधी को गोली से मार गिराया। फिर टार्गेट को ठीक हथगोले की मार में पाकर इन्होंने एक हथगोला निकाला और उसका पिन बाहर खींच ही रहे थे कि इतने में इन पर-स्वचालित राइफल की गोली की बौछार हुई और वहीं इनकी मृत्यु हो गई।

नायक तुल बहादुर छेत्री ने इस प्रकार अनुकरणीय कर्त्तव्यपरायणता, अदम्य साहस, वीरता तथा उच्च कोटि के नेतृत्व का परिचय दिया।

दिनांक 2 अप्रैल 1982

सं० 20-प्रेस/82—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "शौर्य चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. लेफ्टिनेंट कमांडर सुबोध वासुदेव पुरोहित
(01066 वाई०)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 1 फरवरी, 1981)

भारतीय नौसेना के टेस्ट पायलट लेफ्टिनेंट कमांडर सुबोध वासुदेव पुरोहित (01066 वाई०) 1 फरवरी, 1981 को "मीकिंग" में मिनीकाय द्वीप से कोचीन तट की 225 मील की दूरी समुद्र के ऊपर से पार कर रहे थे। वायुयान ने द्वीप से 16.30 बजे उड़ान भरी। लगभग एक घंटे के बाद कोचीन से 120 समुद्री मील की दूरी पर, 7000 फुट की ऊंचाई पर उड़ते समय अचानक वायुयान में जबरदस्त कम्पन होने लगा और कुछ हद तक वायुयान का संतुलन भी बिगड़ गया। कम्पन इतनी तेजी से हो रहा था कि पायलटों के लिए अपनी सीट पर बैठना मुश्किल हो रहा था। खराबी को दूर करने के सभी संभव उपाय करने के बावजूद कम्पन जारी रहा। लेफ्टिनेण्ट कमांडर पुरोहित ने तत्काल आपात स्थिति का विश्लेषण कर लिया और समझ लिया कि उड़ान को जारी रखने के प्रयास से वायुयान के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे। उन्होंने वायुयान को उसी समय समुद्र में उतारने का निर्णय लिया। वायुयान के समुद्री सतह को छूने से ठीक पहले उसका पिछला हिस्सा, पिछले रोटर के साथ वायुयान से टूट कर अलग हो गया। इससे वायुयान का नियंत्रण एकदम बिगड़ गया। लेफ्टिनेंट कमांडर पुरोहित ने दिशात्मक नियंत्रण बिल्कुल न होने और लगातार जबरदस्त कम्पन होने के बावजूद त्रुटि-हीन ढंग से वायुयान को समुद्र में उतार लिया। गंभीर आपात स्थिति का सामना करते हुए उन्होंने असाधारण उड़ान-कौशल एवं अति उच्च कोटि की विमानचालन कुशलता का परिचय दिया। जिसके कारण दुर्घटना में कर्मीदल के किसी भी सदस्य को जरा भी चोट नहीं आई। समुद्री सतह पर सुरक्षित उतरने के बाद इन्होंने समुद्र से बचाव की समस्या का भी समाधान

निकाल लिया। अगले आठ घंटों में और घुप अंधेरी रात में लेफ्टिनेंट कमांडर पुरोहित के अनुकरणीय नेतृत्व और शांत एवं गंभीर व्यवहार के कारण पूरे कर्मीदल मे, विपरीत परिस्थितियों से बचने के लिए एकजुट होकर रहने व अटल विश्वास की भावना जागृत हो गई और इसी कारण ऐसी हालत में समुद्र मे जीवित रहने जैसी कठिन समस्या सुलझा ली गई। साथ ही विपरीत मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों मे भी कर्मीदल का मनोबल ऊंचा बना रहा। वायुयान डूबने से पहले लेफ्टिनेंट कमांडर पुरोहित ही वायुयान के कर्मीदल के अंतिम व्यक्ति थे जो वायुयान से बाहर निकले।

लेफ्टिनेंट कमांडर सुबोध वासुदेव पुरोहित ने इस प्रकार नेतृत्व, साहस, व्यावसायिक कुशलता और अति उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. दिलबाग सिंह सिद्धू, लीडिंग सीमैन,
क्लीअरेंस ड्राइवर 111 (नम्बर 096898–जैड)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 21 फरवरी, 1981)

21 फरवरी, 1981 को लगभग 1635 बजे श्री एस० एन० काटदरे, स्टोरकीपर, नौसैनिक आयुद्ध डिपो, करंजा, की मा डाकयार्ड नौका "नैन्सी" पर चढने का प्रयत्न कर रही थीं। चढ़ते समय वे फिसल गई और पान्टून तथा नौका के बीच पानी मे गिर गई। दिलबाग सिंह सिद्धू, लीडिंग सीमैन, क्लीअरेंस ड्राइवर 111, नम्बर 096898–जैड भी नौका मे चढने के लिए पास ही खडे थे। वे अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना पानी मे कूद गए। डाकयार्ड नौका "नैन्सी" बहुत भारी नौका है और नौका और पान्टून के बीच मे आने वाली कोई भी चीज़ कुचले बिना नही रह सकती। ऐसे गभीर एकदम आने वाले खतरे से डरे बिना लीडिंग सीमैन सिद्धू ने स्वयं भारी खतरा उठाकर अपनी पीठ से नौका को जेटी से परे हटाए रक्खा और इस बीच पानी को सतह से नीचे चली गई महिला को डूबने से बचा लिया। अगर लीडिंग सीमैन सिद्धू ने यह साहसपूर्ण कदम न उठाया होता तो वह वृद्ध महिला नौका और जेटी के बीच निश्चय ही कुचल कर डूब गई होती। यह दूसरा अवसर था जब लीडिंग सीमैन सिद्धू ने करंजा के पास समुद्र मे से एक बार फिर किसी व्यक्ति की जान बचायी।

दिलबाग सिंह सिद्धू, लीडिंग सीमैन, क्लीअरेंस डाइवर 111, ने बार-बार साहसपूर्ण कार्य करके अत्यधिक सतर्कता, साहस और सूझ-बूझ का परिचय दिया।

3 स्क्वाड्रन लीडर गुरचरण सिंह मदान (10452) एफ (पी०)।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 21 जुलाई, 1981)

117 हैलीकाप्टर यूनिट के स्क्वाड्रन लीडर गुरचरण सिंह मदान (10452) एफ (पी) को कैप्टन की हैसियत से 21 जुलाई, 1981 को एक चेतक हैलीकाप्टर, बरेली से गोचर तक उड़ाने के लिए तैनात किया गया था। उन्हे रास्ते मे ईधन भरने के लिए हलद्वानी रुकना था। हलद्वानी मे उड़ने के लगभग 10 मिनट बाद, उनके हैलीकाप्टर ने अचानक झटका खाया और दायी ओर को डगमगाने लगा। वायुयान मे बहुत तेज कम्पन होने लगा और इसका नियंत्रण–कालम सभी ओर से डगमगाने लगा। उसके झटके, डगमगाहट और कम्पन की गति इतनी बढ गई कि उनके और उनके कोपाइलट के लिए नियंत्रण–कालम पर काबू रख पाना मुश्किल हो गया और उनके लिए यंत्र आदि पढ़ पाना भी प्रायः असभव सा हो गया। स्टिक इतनी बुरी तरह से हिलने लगी कि उनकी टांगों पर बार–बार चोटे पड़ने लगी और टागे जख्मी हो गईं। हैलीकाप्टर काबू से बाहर हो गया था और धमाके के साथ उसका गिरना निश्चित हो गया था।

स्क्वाड्रन लीडर मदान ने सराहनीय सूझ–बूझ का परिचय देते हुए बड़ी तसल्ली से आपात स्थिति का विश्लेषण किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इस सारी मुसीबत की जड़ केवल रोटर हैड सिस्टम का फेल हो जाना ही हो सकता है जैसा कि पहले हुई दो घातक दुर्घटनाओं मे हो चुका था। उन्होंने हैलीकाप्टर को तुरन्त किसी भी खुले मैदान में उतारने का फैसला कर लिया। इस इरादे के साथ उन्होंने सामूहिक पिच को नीचे झुकाया। ऐसा करने से उसकी कम्पन कुछ कम हो गई और बड़ी कोशिश के बाद वे नियत्रण–कालम पर कुछ काबू कर पाए। इस तरह से हैलीकाप्टर पर आंशिक नियंत्रण पाने में सफलता मिली। हैलीकाप्टर के अत्यधिक नाजुक संतुलन पर काबू कर पाने के बाद स्क्वाड्रन लीडर मदान अपने आपदग्रस्त हैलीकाप्टर को जमीन से थोड़ा ऊँचे एक छोटे से खुले स्थान पर ले आए। जिस क्षण वे अवतरण–प्रघात को सहने का साहस बटोर पाए थे कि कम्पन एक बार फिर ज्यादा तेज हो गई। यह तो केवल उन्ही के अत्युत्तम उड़ान–कौशल, अनुकरणीय साहस और दृढ़ निश्चय का फल था कि हैलीकाप्टर को कम से कम नुकसान पहुचाए जमीन पर उतारा जा सका।

अत्यन्त गंभीर कठिनाई मे हैलीकाप्टर को बिना किसी ज्यादा नुकसान से बचाकर नीचे लाने मे, स्क्वाड्रन लीडर गुरचरण सिंह मदान ने न केवल एक बहुमूल्य हैलीकाप्टर, अपने कोपायलट और खुद के जीवन को ही बचाया बल्कि एक ऐसी संभावी विफलता के कारण की जांच पड़ताल को भी संभव बनाया जिससे भविष्य मे दुर्घटनाओं से बचा जा सकेगा।

स्क्वाड्रन लीडर गुरचरण सिंह मदान ने इस प्रकार अनुकरणीय साहस, अत्यन्त उच्च स्तर की उड़ान–कुशलता और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

सु० नीलकण्ठन, राष्ट्रपति का उप सचिव

लोक सभा सचिवालय

नई दिल्ली-110001, दिनांक 17 मार्च 1982

सख्या 4/3/80-आर. सी. सी —श्री प्रणव कुमार मुखर्जी सदस्य, राज्य सभा को 9 मार्च, 1982 से रेलवे उपक्रम द्वारा सामान्य राजस्व को देय लाभाश की दर तथा रेलवे वित्त और सामान्य वित्त से सबधित अन्य आनुषगिक मामलों की पुनरीक्षा करने वाली संसदीय समिति मे श्री महेन्द्र मोहन मिश्र के समिति से 6 मार्च, 1982 से त्याग पत्र देने के कारण रिक्त हुए स्थान पर मनोनीत किया गया है।

हरि गोपाल परांजपे
सयुक्त सचिव

वाणिज्य मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 8 मार्च 1982

संकल्प

सं. 4/2/81-ई. पी. जैड.—भारत सरकार ने मुक्त व्यापार जोनों के कार्यचालन की समीक्षा करने के लिए दिनांक 7 सितम्बर, 1981 के संकल्प सं. 4/2/81-ई पी. जैड. के अंतर्गत स्थापित कृत्रिक दल की अवधि को 31 जुलाई, 1982 तक और चार महीनों के लिए बढ़ाने का विनिश्चय किया है।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत सरकार के सभी मंत्रालयों और सभी राज्य सरकारों की सामान्य जानकारी एवं संसूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

के. जी. रामनाथन, संयुक्त सचिव

पर्यावरण विभाग

नई दिल्ली-110011, दिनांक 17 मार्च 1982

शुद्धिपत्र

सं. 1/9/81-एन. ई. डी. बी./इन्वा.-5—राष्ट्रीय पारिविकास बोर्ड में 6 प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के मनोनयन से संबंधित पर्यावरण विभाग के दिनांक 4/8 जनवरी, 1982 के संकल्प संख्या 1/9/81-ई. एन. वी. में क्रम सं. 3 पर दिया हुआ नाम और पता ठीक किया जाता है जो निम्नानुसार पढ़ा जाए:—

श्री के. एम. तिवारी,
अध्यक्ष,
वन अनुसंधान संस्थान तथा कालेज,
देहरादून (उत्तर प्रदेश)

एन. डी. जयाल, संयुक्त सचिव

कृषि मंत्रालय

(कृषि और सहकारिता विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 15 जनवरी 1982

संकल्प

विषय:—वन अनुसंधान संस्थान तथा महाविद्यालय देहरादून के कोर्ट तथा कार्यकारी परिषद का पुनर्गठन ।

सं. 12-30/80-एफ. आर. वाई. (वानिकी)—खाद्य तथा कृषि मंत्रालय द्वारा जारी किए गए 4 नवम्बर, 1961 के संकल्प संख्या 12-4/59-एफ से वन अनुसंधान संस्थान तथा महाविद्यालय को कोर्ट तथा उनके कार्यकारी परिषद का गठन किया गया था। अब यह निर्णय किया गया है कि उपरोक्त कोर्ट तथा उसका कार्यकारी परिषद निम्न रूप से पुनर्गठित किया जाए:—

वन अनुसंधान संस्थान तथा महाविद्यालय के कोर्ट का गठन:—

1. कृषि मंत्री—अध्यक्ष
2. कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (कृषि)—पूर्व-अध्यक्ष
3. सचिव (कृषि तथा सहकारिता, भारत सरकार—उपाध्यक्ष
4. लोक सभा के सदस्य (2)—सदस्य
5. राज्य सभा का सदस्य (1)—सदस्य
6. सलाहकार (कृषि) योजना आयोग—सदस्य
7. सचिव, पर्यावरण विभाग, भारत सरकार—सदस्य
8. सचिव, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार—सदस्य
9. वन महानिरीक्षक—सदस्य
10. अध्यक्ष, वन अनुसंधान संस्थान तथा महाविद्यालय—सदस्य
11. महानिदेशक, विज्ञान तथा औद्योगिक, अनुसंधान परिषद—सदस्य
12. महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद—सदस्य
13. वित्तीय सलाहकार, कृषि और सहकारिता विभाग, भारत सरकार—सदस्य
14. निदेशक, भारतीय वन प्रबंध संस्थान—सदस्य
15. निदेशक, भारतीय वन सर्वेक्षण—सदस्य
16. उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी तथा पूर्व के प्रत्येक क्षेत्र से प्रत्येक क्षेत्र से बारी-बारी से एक महावनपाल—सदस्य
17. से
20 तक
21. भारत सरकार के कृषि और सहकारिता, विभाग के वानिकी प्रभाग में संयुक्त सचिव—सदस्य-सचिव

कोर्ट के कार्यकारी परिषद का गठन

1. सचिव (कृषि और सहकारिता), भारत सरकार—अध्यक्ष
2. सलाहकार (कृषि) योजना आयोग—सदस्य
3. वन महानिरीक्षक—सदस्य
4. अध्यक्ष, वन अनुसंधान संस्थान तथा, महाविद्यालय—सदस्य
5. महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान तथा, महाविद्यालय—सदस्य
6. महानिदेशक, विज्ञान तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद—सदस्य
7. वित्तीय सलाहकार, कृषि और सहकारिता विभाग, भारत सरकार—सदस्य
8. निदेशक, भारतीय वन प्रबंध-संस्थान—सदस्य
9. भारत सरकार के कृषि और सहकारिता विभाग के वानिकी प्रभाग में संयुक्त सचिव

और

उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी तथा पूर्व के प्रत्येक क्षेत्र से बारी-बारी से एक महावनपाल—सदस्य-सचिव

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति भारत सरकार के सभी मंत्रालयों तथा विभागों, तथा सभी राज्य सरकारों और संघ राज्यक्षेत्रों के वन विभागों, योजना आयोग, मंत्रिमंडल, लोक सभा सचिवालय, प्रधान मंत्री का सचिवालय, भारत के नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक, वन अनुसंधान संस्थान तथा महाविद्यालय देहरादून के कोर्ट के सभी सदस्य और इसकी कार्यकारी परिषद् को भेजी जाय।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को आम जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाय।

समर सिंह
संयुक्त सचिव

संचार मंत्रालय

डाक तार बोर्ड

नई दिल्ली-110001, दिनांक 18 मार्च 1982

सं. 11-4/81-एल. आई.—राष्ट्रपति ने डाक जीवन बीमा और सावधि बीमा नियमों में आगे और निम्नलिखित संशोधन करने का सहर्ष निर्णय लिया है, अर्थात्:--

1. (1) ये नियम डाक जीवन बीमा और सावधि बीमा (संशोधन) नियम, 1982 कहे जायेंगे।

(2) ये जनवरी, 1982 की पहली तारीख से प्रवृत होंगे।

2. डाक जीवन बीमा और सावधि बीमा नियमों में, नियम 3 में;

(1) नियम (3) के नीचे मौजूदा टिप्पणी के पश्चात निम्नलिखित टिप्पणी जोड़ी जाए, अर्थात्:—

"टिप्पणी" अंधे, गूंगे व बहरे आदि जैसे शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों से अधिकतम 10,000/-रु. के बीमा प्रस्तावों को स्वीकार किया जाय बशर्ते कि वे व्यक्ति डाकघर बीमा निधि नियमों की शर्तों के अनुसार डाक जीवन बीमा के साथ बीमा हेतु पात्र हों तथा डाक जीवन बीमा के साथ बीमा हेतु प्रस्तावक की जांच करने के उपरांत चिकित्सा अधिकारी द्वारा उनको स्वस्थ घोषित किया गया हो।

इसे वित्त मंत्रालय (वित्तीय कार्य विभाग बीमा डिवीजन) के दिनांक 13-11-1980 के अनौपचारिक पत्र संख्या 17-आई. एन. एस. ए. सी. टी. सी (1)/81 तथा डाक तार वित्त की दिनांक 18-1-1982 की डायरी संख्या 167 एफ ए 111/82 के अधीन उनकी सहमति से जारी किया गया है।

एम. आर. इसरानी
निदेशक (डाक जीवन बीमा)

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1982

No. 19-Pres./82.—The President is pleased to approve of the award of 'SHAURYA CHAKRA' to the undermentioned persons for acts of gallantry to :—

1. SHRI VINOD KUMAR DIMARI,

FORMER DEPUTY FOREST RANGER, JAMANI, DISTRICT HOSHANGABAD, MADHYA PRADESH,

(Posthumous)

(Effective date of Award : 24th June 1978)

Shri Vinod Kumar Dimari was employed as Forester in Madhya Pradesh. In June, 1978, he was posted to Jamani Sub-Division in Hoshangabad Forest Division as Deputy Forest Ranger. The area was notorious for anti-social elements involved in illegal forest falling. On the night of the 23rd/24th June 1978, at 2 a.m. when he along with his Forest Guards was engaged in a check of vehicles, two bullock-carts loaded with illegal forest products were detected at the main Tawi canal near Pipaldhana village. He asked the culprits to proceed to Jamani with the bullock-carts. They had hardly reached a kilometre, when all of a sudden 15 to 20 persons of Pipaldhana village attempted to attack Shri Dimari and others. He faced the culprits armed with lethal weapons with great courage. During the encounter he sustained serious injuries to which he succumbed on the morning of the 25th June, 1978.

Shri Vinod Kumar Dimari thus displayed gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

2. SHRI DHARAM PAL VIJ,
3967 ROSHANARA ROAD, DELHI.

(Effective date of Award : 19th March, 1980)

On the 19th March, 1980, at about 2 p.m., Shri Dharam Pal Vij was passing through Wazirpur in his car when he saw a motor cycle with three persons. One person had an orange coloured bag. On an indication from the motor cyclist, Shri Vij stopped his car, whereupon two of them came to him, armed with a pistol and a revolver. One person stood by the left side window with his revolver and the other by the right side window of the car with his pistol and asked him to hand over every thing in his possession, failing which he would be killed. They took from him his watch, two gold rings, and one gold 'kara' and thereafter proceeded towards Punjabi Bagh. Shri Vij chased them in his car and gave them a side hit near Britania Biscuit Factory as a result of which they fell down. Shri Vij got down from his car, caught hold of one of them, later identified as Shri Rajinder alias Vijay of Muzaffarnagar. In the meantime, the local police came and nabbed the second person, Shri Jai Singh of Meerut. The third person, named Shri Dharam Lal, however, managed to escape.

Shri Dharam Pal Vij displayed courage, determination and gallantry.

3. FLYING OFFICER SURESH GATTU (14562), FLYING (PILOT).

(Effective date of Award : 23rd May 1980)

On the 23rd May, 1980, Flying Officer Suresh Gattu, was authorised to fly as No. 2 in a two aircraft sector reconnaissance sortie. At the end of the sortie, after peel off over head, while turning on downwind, Flying Officer Suresh Gattu found his flight instruments flicker and become unserviceable. His radio telephone faded out at this stage. He tried lowering undercarriage unsuccessfully by normal means. The cone was stuck and all attempts to retract it manually were of no avail. Flaps also failed to lower. The trimmer was stuck and inoperative and there were no light indications in the cockpit. This confirmed that he had total electrical failure. Flying Officer Suresh Gattu lowered the undercarriage by emergency method and made a flapless approach. After touch down he put off HP Cock and operated the tail chute. The tail chute did not operate and he was left with an aircraft with maxarette braking also inoperative (his threshold speed was 300 KMPS, it being a flapless approach.) Flying Officer Suresh Gattu brought the aircraft to a stop safely by the end of the runway and with scant regard to his personal safety when odds pitched against him were very high saved a costly aircraft.

Flying Officer Suresh Gattu thus displayed a high degree of professional skill, competence and devotion to duty.

4. G-10817 DRIVER MECHANICAL EQUIPMENT CHET SINGH (Posthumous)

(Effective date of Award : 24th June 1980)

On the 24th June 1980, heavy floods in Malling Nallah breached at Hindustan-Tibet Road for about a lenth of 300 ft. at Malling in Kinnaur district of Himachal Pradesh. This paralysed all traffic from Pooh to Kaurik. Shooting stones coming from the hill made even pedestrian traffic risky.

Under such critical situation, G-10817 Driver Mechanical Equipment Shri Chet Singh of 851 Drainage Maintenance Platoon was detailed to operate a dozer to cut fresh formation and make a fresh road in the breached area Shooting stones posed constant danger to the safety of the person and the equipment However, Shri Chet Singh continued his work and completed a major portion of it He escaped many boulders, but while he operating the dozer he was hit by a shooting stone on 2nd July 1980 at 0745 hours and sustained serious injury on his head After first aid, he was evacuated to Section Hospital at Pooh He died before reaching the Hospital.

Shri Chet Singh thus displayed undaunted courage, determination and devotion to duty of a high order

5 KUMARI SUNITA KAPOOR AND SHRIMATI URMILA KANTA KAPOOR,

VILLAGE MOREH DISTRICT TELGNOUPAL, MANIPUR

(Effective date of Award 17th July 1980)

On the 17th July 1980, at about 8 30 p m, two armed robbers entered the house of Shri Anand Dev Kapoor at village Moreh, District Telgnoupal, Manipur Seeing them Kapoor and other inmates of the house got so terrified that they could not raise an alarm for help The robbers demanded from Shri Kapoor cash and gold ornaments on pain of death of all the inmates His daughter, Kumari Sunita Kapoor (12 years), immediately hit one of the armed robbers with 'Dagara' (a household material made of fine bamboo pieces for sifting rice grains) on his hand As a result of her sudden daring act, the loaded pistol fell down from the robber's hand and he was completely perplexed In the meantime, Shrimati Urmila Kanta Kapoor caught the other robber from the back A scuffl ensued The robbers could not open fire but they managed to escape. From the spot one loaded pistol with one 303 round was recovered by the police

Kumari Sunita Kapoor and Shrimati Urmila Kanta Kapoor thus displayed courage and presence of mind of the highest order, at the risk of their personal safety, in resisting armed robbers

6 SHRI YANGLEMSE KHIEMNUGAN, VILLAGE GUARD POST COMMANDER (VGL/H W NO 7981),

CHIPHUR VILLAGE, THONOKNYU CIRCLE, TUENSANG DISTRICT, NAGALAND

(Effective date of Award 2nd September 1980)

On the night of 2nd September 1980, at about 8 15 P M, Shri Yanglemse Kheiemnugan, Village Guard Post Commander on being informed about the possibility of attack on Chiphur village by some underground hostiles immediately ran to that village and alerted all village Guards by blowing whistle from house to house and also made proper arrangements for defence of the village Around mid-night, about 100 underground personnel armed with automatic weapons with about 50 porters were reported to be close to Chiphur village Shri Khiemnugan then started beating the village log-drum and shouted to the undergrounds that he was ready to meet any challenge from them Although the village Guard Post at Chiphur had only 40 Village Guards with 303 rifles and some muskets Shri Khiemnugan's determination encouraged the personnel to stand solid like a rock against a superior force At the day break, the underground personnel left the area with their porters without attacking the village

Shri yanglemse Khiemnugan thus displayed determination, exceptional courage and devotion to duty of a high order

7 SHRI H KHUNGO KHIEMNUGAN (VG No 7976) PANG VILLAGE THONOKNYU CIRCLE, TUENSANG DISTRICT

(Posthumous)

(Effective date of Award 3rd September 1980)

On the 3rd September 1980 Shri H Khungo Khiemnugan, Village Guard was doing sentry duty at the entrance of Pang village Suddenly a large number of underground armed personnel armed with automatic weapons, appeared on the scene Knowing fully well that they would not spare him, he stuck to his place of duty and opened four rounds from his 303 rifle against the onslaught of hostile strength. He inflicted injuries and caused some deaths on the hostile side. Immediately thereafter, he was under repeated fire from the automatic weapons from the hostile side and he fell dead on the spot

Shri H Khungo Khiemnugan thus displayed exceptional courage and devotion to duty of a very high order

(1) VILLAGE GUARD NO 2224, SHRI C KHOU KHIEMNUGAN

(2) VILLAGE GUARD NO 2222, SHRI PASSING KHIEMNUGAN

(3) VILLAGE GUARD NO 8082, SHRI P THANGSOI KHIEMNUGAN AND

(4) VILLAGE GUARD NO 7978, SHRI LANGSOI KHIEMNUGAN, ALL OF VILLAGE PANG, THONOKNYU CIRCLE, DISTRICT TUENSANG, NAGALAND

(Effective date of Award 3rd September 1980)

On the 3rd September 1980 at about 11 a m, about 100 underground highly armed with automatic weapons along with about 50 porters suddenly descended upon Pang village from the north and immediately started looting properties and setting fire to the houses They also fired from their automatic weapons intermittently All available Village Guards equipped with old 303 rifles and muskets at great risk to their personal security, took immediate action to thwart the hostile attack Shri C Khou Khiemnugan (2224) and Shri Passing Khiemnugan (2222) opened fire from their 303 rifles and killed one hostile each Anticipating the route of retreat of the hostiles, the Village Guards took defensive positions and shot dead one underground person Similarly, Shri P Thangsoi Khiemnugan (8082) dropped dead the leader of the hostile On the upper side of the village, Village Guards laid two ambushes in groups They harassed the hostiles by repeated firing when they were retreating after looting and burning the village and killing some villagers The retreating hostiles were compelled to fight a gun battle for more than 3 hours in which they suffered heavy casualties Such coordination of exceptional bravery especially on the part of Shri Langsoi Khiemnugan (7978) and others against a very superior force caused great damage to the morale of the hostiles who ultimately had to run away, leaving behind 6 dead bodies

Shri C Khou Khiemnugan Shri Passing Khiemnugan, Shri P Thangsoi Khiemnugan and Shri Langsoi Khiemnugan thus displayed conspicuous gallantry, undaunted courage and devotion to duty of a high order

9 SHRI VAN LALAO,

VILLAGE PEARSUMMUN, P O & P S CHURACHANDPUR,

SOUTH DISTRICT, MANIPUR

(Effective date of Award · 9th September 1980)

On the night of 9th/10th September 1980, 6 rifles 303 and 235 rounds of 303 ammunition were taken away by the miscreants from Kangpat in Manipur Shri Van Lalao, who was at Imphal on the 10th September 1980, proceeded on the trial of miscreants and reached Khungloo village On the morning of 13th September 1980, the party recovered 20 rounds of 303 ammunition from a village woman, who had found them in her fields Shri Lalao proceeded to Assangkhullan village with his party on this positive clue On 14th September 1980, they cordoned the village and arrested five persons After quick interrogation, the party laid an ambush for other three miscreants who had gone to hand over the weapons but they did not fall into the trap Thereafter the party returned to Kangpat Shri Lalao assisted in interrogation and extracted information about the hostile's camp and about the leader of these miscreants On 17th September 1980, leader of camp Shri Ngaripan was captured As further operation was being planned Shri Lalao moved 35 KMs to Chassed on 18th September 1980, and brought important stores despite very bad weathers

Shri Lalao also led various groups in operations from 21st September 1980 onwards and collected valuable information. His group during the course of joint operation launched with effect from the 7th October 1980, saw one man moving with a rifle nearby during the night Shri Lalao followed him

silently and captured him and snatched his weapon He was found to be volunteer rikeson On 9th October 1980, while leading group, Shri Lalao spotted one extremist He immediately fired at the extremist and immobilised him On that ar ngan, Shri Ngaianzar and Shri Khanout also fired at and killed the extremist

Shri Van Lalao thus displayed exemplary courage, bravery and devotion to duty of a high order

10 *SHRI RAMWUNG SHIMRA PAMTHENG,*

VILLAGE & PO USHANGSHAK

EAST DISTRICT MANIPUR

(Effective date of Award 9th September, 1980)

On the night of 9th 10th September 1980, 6 rifles 303 and 235 rounds of 303 ammunition were taken away by the extremists from Kangpat in Manipur after exchange of fire between the extremists and the volunteers Shri Ramwung Shimra Pamtheng was given the main job of collection of information and of interrogation as he knew all tribal and Meitei dialects He provided valuable clues that these weapons had not been taken away by the extremists directly but through their tribal agents On this, he along with only six volunteers marched to Assangkhullan covering 35 KMs on foot through a dangerous area Shri Pamtheng with three volunteers marched overnight and brought back correct information whereupon five suspected persons were captured Shri Pamtheng immediately interrogated them and extracted information As a result of further interrogation vital information was extracted and immediate follow up action was taken

Shri Pamtheng found out that one Shri Nagaipam of Ngapram village was the gang leader of this arm looting party and he was captured and one unauthorised serviceable automatic rifle was recovered from his house Another suspect Shri Simther of Assangkhullan village was captured and one unauthorised gun was seized from him Through his efforts two extremists' hideouts were found and destroyed and contact with them was established on 25th September 1980 In the operations launched with effect from the 7th October 1980 Shri Pamtheng was the first man to lead his group of volunteers into the hostile infested area of Choro. His tireless efforts in collecting information resulted in a successful raid on 8th October 1980 on hostiles camp He with his guides and party led to the hostiles hideout

Shri Ramwung Shimra Pamtheng thus displayed exemplary courage, tireless and sense of patriotism at grave risk to his own life

11 *SHRI HUNGYO HENREY*

VILLAGE KACJONG P O CHASSAD

EAST DISTRICT MANIPUR

(Effective date of Award 9th September, 1980)

On the night of 9th/10th September 1980, 6 rifles 303 and 235 rounds of 303 ammunition were taken away by the miscreants from Kangpat in Manipur Shri Hungyo Henrey was called and briefed in detail about the incident On 12th September 1980 immediately after reaching Kangpat, he interrogated his volunteers and inspected the items left behind by the raiders On seeing one "Dab" he recognised that it belonged to Assankhullan village tribals On this he under Shri Lalao led a party on trail to that village *Enroute* on the morning of 13th September 1980 this party recovered 20 rounds of ammunition at Khunglon village from a woman who found them in her fields On reaching Assangkhullan, the village was surrounded and all young male villagers were lined up for identification In the action that followed five culprits were apprehended It needed boldness for a local man to identify and capture insurgent recruits right in front of everybody but Shri Henrey with his utmost determination and gut

[illegible] 's group spotted two abandoned camps of [illegible] destroyed them It was also the group of Shri Henrey which on 25th September, 1980 established contact with extremist and noticed two extremists crossing river Maklong In the operations launched with effect from 7th October 1980 Shri Henrey was the front scout of Kangpat group and starting in the afternoon from Kangpat he took the group to Choro village the same night Shri Pamtheng met the party with correct information Shri Henrey started with 10 volunteers at 2200 hours on 8th October 1980, and spending one whole night marching and searching, captured the headman, minister and two other hostile agents of Chorokhun village and by 0400 hrs On 9th October, 1980 brought them to Chorokhullan, 5 6 Kms away from the [illegible] village Their interrogation confirmed the information and immediately the party moved into action Shri Henrey led the party with guides for attack at the extremists hideout He with his group chased the extremists relentlessly and remained in the forefront and was a symbol of great encouragement to all the personnel taking part in the action On 21st October 1980 he joined another party and carried out search operations upto 28th October 1980, which resulted in recovery of unauthorised weapons

Shri Hungyo Henrey thus displayed exemplary acts of courage and heroism disregarding the risk involved to his own life

12 *SQUADRON LEADER ADHIP BANERJEE (11592) FLYING (PILOT)*

(Effective date of Award 17th September, 1980)

On the 17th September 1980 Squadron Leader Adhip Banerjee (11592) Flying (Pilot) who is a test pilot, was detailed to carry out an air test on a Hunter aircraft During the descent after the air test while breaking clouds at 1000 feet a vulture hit the front wind shield of the aircraft The impact shattered the canopy causing an explosion and resulting in depressurisation of the cockpit and a very strong air blast The vulture came through the wind shield and hit him directly on the face The impact was fortunately taken by the Pilots visor and helmet His visor and the front canopy were badly smudged with blood and pulp of the bird as a result of which the Pilots frontal vision was completely obstructed At this juncture Squadron Leader Adhip Banerjee displayed great presence of mind and resolve to bring the aircraft to base safely He immediately got on to instruments which he could barely see Since there were clouds above and the ground was only 1000 feet below utmost flying skill and accuracy was necessary to manoeuvre the aircraft

The Pilot dropped speed and checked up all other aircraft system while turning on to down-wind on the mental DR Since the noise level in the cockpit was very high due to the air flow Squadron Leader Banerjee transmitted the extent of damage of the aircraft and asked Air Traffic Control to fire a great cartridge on finals After dropping speed barely able to keep his eyes open he sighted the runway with great difficulty and carried out a smooth landing saving a costly aircraft from destruction

Squadron Leader Adhip Banerjee thus displayed a very high standard of flying skill and presence of mind in bringing the aircraft safely back in complete disregard to personal safety

13 *SQUADRON LEADER OM PRAKASH SHUGAL (9532) FLYING (PILOT)*

(Effective date of Award 18th September, 1980)

Squadron Leader Om Prakash Shugal (9532), Flying (Pilot) has to his credit a total of nearly 2700 hours of flying out of which 740 hours are on operational assignments alone

On the 18th September 1980, Squadron Leader Om Prakash Shugal was detailed for an air maintenance supply landing sortie to one of the Advance Landing Ground (ALG) in the Eastern Sector in a two engined transport aircraft After take off from the ALG on his return flight to base, the starboard engine failed without any prior warning or indication He immediately turned towards the ALG to carry out an emergency landing and at the same time, tried to find the possible cause of the engine failure He had barely coped with this emergency when the port engine started to backfire heavily resulting in loss of power Under the circumstances he was left with no other choice but to draw on the erratic power from the port engine for as long as was possible so as to reach the ALG Because of the misbehaviour of the port engine he had to eventually switch it off He restarted the starboard engine because there was no choice He nursed whatever power was avail-

able from this live engine to make a successful emergency landing at the ALG which is surrounded by inhospitable terrain and thick jungle. Crash landing would have resulted in total destruction of the aircraft and certain death for all on board, which included the crew members and nine passengers.

The directional control during the critical stage of approach to the ALG became most difficult due to heavy backfire and erratic power from the starboard engine. By displaying cool courage in the face of near disaster, Squadron Leader Shugal coped admirably with the situation and by judicious selection of flaps on the final approach in conditions of near total loss of power, the successful landing was executed.

Squadron Leader Om Parkash Shugal thus displayed exceptional cool mindedness, superb airmanship and exemplary courage.

14. *FLIGHT LIEUTENANT PRAKASH DHULAPPA NAVALE* (13602), *FLYING (PILOT)*

(Effective date of Award : 20th September, 1980)

On the 20th September, 1980, Flight Lieutenant Prakash Dhulappa Navale (13602), Flying (Pilot), was called upon to fly a VIP for reconnaissance in and around the flood affected area of Orissa. After landing at GUNPUR, the VIP started talking to the people around the helicopter. While doing so, a section of the crowd started shouting slogans against him. The agitation picked up momentum and soon the agitators started closing in on the VIP. Flight Lieutenant Navale on seeing the imminent crisis, forced his way through the crowed and with total disregard to personal safety, stood like a wall between the crowed on one side and the VIP and the helicopter behind him. The agitating public, not only manhandled Flight Lieutenant Navale but took him and the VIP away from the helicopter which was damaged.

Flight Lieutenant Navale and the VIP returned after the mob fury had mellowed down. He quickly assessed the extent of damage and while doing so one of the agitators told him to take off and to leave the VIP behind. He took advantage of the situation and took off. He immediately landed back and quickly picked up the VIP and flew him safely to GOPALPUR.

Had Flight Lieutenant Navale not flown out the VIP at that critical time, the situation could have taken a grave turn and could have resulted in serious consequences to the VIP and further break-down in the law and order situation.

In this action, Flight Lieutenant Prakash Dhulappa Navale displayed determination courage, presence of mind and devotion to duty of a high order.

15. *JC 87532 SUBEDAR KARNAIL SINGH, JAMMU AND KASHMIR RIFLES.*

(Effective date of Award : 22nd October, 1980)

On the 22nd October, 1980, JC 87532 Subedar Karnail Singh, Jammu and Kashmir Rifles, was detailed to lead a special mission based on reliable informatoin that a prominent leader of unlawful Peoples' Libration Army (PLA) was likely to hold a meeting in Imphal area. The Junior Commissioned Officer planned and proceeded with his party to maintain surveillance of the said area. The JCO noticed a person moving under suspicious circumstances and followed him alongwith another jawan. The suspect who had become alert tried to flee by positioning his pistol, but Subedar Karnail Singh over-powered the extremist and disarmed him. The extremist was later identified as Chirom Ranjit Singh, the Second-in-Command of the unlawful PLA, who carried a cash award for his apprehension.

Later, on 26th November 1980, Subedar Karnail Singh was detailed to cary out traffic frisking on the Imphal Road. While the column was carrying out the check of pedestrians and cyclists, one of the cyclists fired upon the lookout man. Subedar Karnail Singh immediately came forward and opened fire from his carbine instanteously killing the cyclist who was later identified as a hard core PLA member.

During these valient acts, JC 87532 Subedar Karnail Singh displayed tenacity, extreme devotion to duty leadership and courage of a high order in the best tradition of the Army.

16. *G/106874 SUPERINTENDENT BUILDINGS AND ROADS GRADE 1 VALAIAHNADAR PERIVANDAVAR.*

(Posthumous)

(Effective date of Award : 13th December, 1980)

During October, 1980 to December 1980 G/106874 Superintendent, Buildings and Roads Grade-I, Valaiahnadar Perivandaver of 160 Formation Cutting Platoon (General Reserve Engineer Force) was incharge of construction cutting works on Sansari-Killer-Thirot Road in Lahul Valley. He was supervising the work of 100 GREF personnel and 400 casual labourers.

At KM 27 the Unit had lost a labourer on 1st December, 1980 due to rock slide. The work was not progressing properly at this site owing to the fear induced in the minds of the workers by this accident. Shri Valaiahnadar Perivandavar gave confidence to his men to resume the work by his personal example. Unfortunately, on 13th December 1980, a rockfall suddenly started coming down from 200 ft. above. Seeing the rockfall coming, he got concerned about the safety of his men and instructed them to move to secure places. All the men moved to safety and were not affected by the huge slide. But in the process of ensuring the safety of his men, Shri Valaiahnadar Perivandavar lost time to save himself. A mass of rock fell on his and he got completely burried under the same. When the officer-in-charge of the Platoon reached the site, he found him breathing his last.

Shri Valaiahnadar Perivandavar this displayed courage, determination and devotion to duty of a very high order.

17. 293066 CORPORAL DARSHAN SINGH BRAR,

(Posthumous)

WORKSHOP FITTER (C).

(Effective date of Award : 25th January, 1981)

On the 25th January, 1981, Corporal Darshan Singh Brar, Workshop Fitter (C), alongwith his wife, boarded the Kalka-Ferozpur Mail at Chandigarh for Bhatinda to attend the marriage of his sister-in-law. At about 0115 hours, when the train left Barnala Railway Station, three hoodlums entered the compartment in which Corporal Brar was travelling. Two of them were armed with knives and the third one had a country made pistol. The robbers started waking up the passengers and demanded all the cash and valuables in their possession. Corporal Brar and his family were also woken up by one of the miscreants who, brandishing a knife, asked them to hand over all their cash and valuables. Instead of submitting to the threats like the other passengers, Corporal Brar boldly resisted and put up a fight. Even though he was un-armed, Corporal Brar caught hold of one of the dacoits and shouted to the other passengers to get up and resist the robbers boldly. Unfortunately, due to a general scare, none of the passengers put up any resistence and Corporal Brar continued to fight single handed. While he was about to overpower one of the robbers, the man with the gun hearing the call of his companion, joined in and fired at Corporal Brar from a close range. Corporal Brar slumped down and collapsed immediately.

The courage and heroic fight put up by Corporal Darshan Singh Brar with the hoodlums was not only in self defence but was also aimed at saving the other passengers and his ultimate sacrifice is in the best traditions of the service.

18 G.97871 OPERATOR EXCAVATING MACHINERY RAWEL SINGH.

(Effective date of Award : 5th February 1981)

There was a heavy snow fall between 24th January 1981 and 8th February, 1981 between Kilometer 135 and Kilometer 212 on National Highway 1A from Jammu to Srinagar. This resulted in a number of slides and snow avalanches. G 97871 Operator Excavating Machinery Rewal Singh was deployed to operate his dozer and clear snow between Kilometer 136 and 180. On the 5th February 1981 at about 1400 hours a number of snow avalanches of heights upto 6 metres were triggered in the area. As a result the road was blocked and about 100 buses/Civil trucks and an Army convey moving from Srinagar to Jammu were stranded on either side of the avalanche area. G 97871 Operator Excavating Machinery Rawel Singh was entrusted with the challenging

task of clearing of snow avalanches. By about 1930 hours, he had cleared [illegible] 80 [illegible] of the avalanches by working continuously, competently and without any regard to personal safety. Suddenly a snow slip occurred on the top of his work site and [illegible] him and the dozer. He sustained injuries in the accident and would have met his end, had not the Jammu and Kashmir traffic police, civilian officers and general public come to pull him out of the snow and evacuated him to Banihal Hospital.

G. 97871 Operator Excavating Machinery Rawel Singh thus displayed courage and devotion to duty of a very high order.

19. SHRI MOHAMED FAZRUL REHMAN. MASJID ROAD, PAONA BAZAR, IMPHAL.

(*Effective date of Award : 24th April 1981*)

On the 24th April 1981, at about 11.15 a.m. when Shri Mohd. Fazrul Rehman was busy in receiving payments from customers in his restaurant named 'Muslim Grand Hostel', four armed young miscreants entered. While one of them stood outside guarding the main door the second miscreant covered the customers and workers (about twenty) with a gun ordering them not to move the remaining two miscreants rushed to the cash counter. Pressing the muzzle of pistol near his head, they asked Shri Rehman to hand over to them all cash available. Shri Rehman grappled with the armed miscreants and pinned one down on the ground seeing which the other miscreant fired injuring one Shri Mohamed Alauddin. On facing such strong resistance at the hands of Shri Rehman, the miscreants panicked and managed to escape, leaving behind one of their associates. The miscreant pinned down by Shri Rehman was disarmed and one loaded pistol with 5 rounds of ammunition were recovered from him. The miscreant was later identified as Shri Soraisen Inaoba Singh, a member of an extremist organisation of Manipur.

Shri Mohd. Fazrul Rehman thus displayed courage and gallantry.

20. CAPTAIN RANJIT SINGH DEV (IC-24238), ARTILLERY (AIR OBSERVATION POST).

(*Effective date of Award : 26th May 1981*)

On 24th May, 1981, information was received that some members of a Japanese mountaineering expedition were in a precarious condition, a few hundred feet short of Nun Kun Peak at a height of 6300 metres. On 25th May, 1981, several attempts to land a helicopter had to be abandoned due to a very high density altitude.

Captain Ranjit Singh Dev was detailed to carry out the task on the 26th May, 1981. Along-with Captain P. C. Bhandari as co-pilot, he took off at 0530 hours from Srinagar air field for Nun Kun. On reaching the area, Captain Dev saw that he would have to land in a totally unprepared and restricted snowy surface between the two peaks at 23,800 ft. which is 800 ft. above the service ceiling of the aircraft. The place was interspersed with deep crevasses and covered with loose snow. Aware of this and assessing that he would have only marginal reserve of power even if the helicopter was flown single pilot, he landed at the Advance base camp and dropped the co-pilot. He took off alone for the challenging mission fully aware of the risks involved to rescue the mountaineers who were in a serious condition.

The cloudy and turbulent weather and the snow covered terrain made the mission extremely dangerous. Having located the casualties after several attempts, Captain Dev landed in a small area between the twin peaks. As the helicopter was landed the exhausted mountaineers came out of their tent dragging their unconscious companion. With considerable effect first casualty was kept in the helicopter. He then took off and picked up the co-pilot from the Advance Base Camp and landed at Kargil with marginal fuel.

Captain Dev again got airborne to rescue the remaining mountaineers. The rise in temperature at the site had raised the density altitude and increased the already high turbulence level. He landed at the same spot, on two subsequent sorties and evacuated the remaining mountaineers with all their equipment.

Captain Ranjit Singh Dev thus displayed a very high degree of professional competence, determination, courage and devotion to duty.

21. LIEUTENANT OM PRAKASH SINDHU (01591-R), IN.

(*Effective date of Award : 6th June 1981*)

On the evening of 6th June 1981, at approximately 1650 hours the ill-fated 416 Dn Passenger train from Samastipur to Banmukhi fell into the Bagmati river. The currents at the site of the disaster were very sharp, water muddy and deep reducing the underwater visibility to nearly zero. The Indian Navy was assigned the hazardous task of extricating with utmost despatch the bodies of the victims from the sunken wreckage and salvaging the bogies buried deep in the river bed.

Lieutenant Om Prakash Sindhu (01591-R) was entrusted with the job of locating the submerged bogies and thereafter clearing them of the trapped bodies. Notwithstanding the most hazardous diving conditions and the grave dangers posed by the tangled wreckage to his personal safety, he carried out the initial dives for under water survey and locating the wreckage. He continued diving with exemplary fortitude after facing grave risks himself so that his team was exposed to lesser dangers. Under his dynamic and inspiring leadership and sound organisation his team succeeded in locating and marking two of the sunken bogies.

Lieutenant Om Prakash Sindhu thus displayed gallantry perseverence, dedication to duty and inspiring leadership.

22. GO-NYA ASSISTANT ENGINEER (CIVIL) KISHAKKETHIL RAGHAVAN PILLAI JAYAPRAKASAM.

(Posthumous)

(*Effective date of Award : 19th June 1981*)

Construction of Tuensang Mon-Nagirimara road which is an important communication link in Nagaland was in progress. It was necessary to establish a camp at Km. 71 (near Ukha) on this road to carry out improvement works. The area was known to be infested with underground hostiles and there was no volunteer officer to accept charge of this camp. Knowing fully well the dangers involved, GO-NYA Assistant Engineer (Civil) Shri Kishakkethil Raghavan Pillai Jayaprakasam volunteered to take up the job in January 1980. Encouraged by his personal example other personnel and casual labourers came forward to stay in the camp.

Shri Jayaprakasam was totally involved in his duties in utter disregard of the danger to his person. He took particular care to guard the stores and materials entrusted to him in order to avoid their falling into hands of the hostiles. His courage and devotion to duty motivated other personnel also into similar action.

On the night of 19th June, 1981, a group of hostiles, armed with automatic weapons and who were apparently looking for loot of valuables and explosives entered the camp, broke open the door of Shri Jayaprakasam's room and shot him at point-blank range.

Shri Kishakkethil Raghavan Pillai Jayaprakasam thus displayed indomitable courage, conspicuous gallantry and devotion to duty of a very high order.

23. G/44427 DRIVER MECHANICAL EQUIPMENT NACHHETAR SINGH

t (*Effective date of Award : 20th June, 1981*)

In August, 1978, the road sector from GANGNANI to DABRANI on Rishikesh-Joshimath road was washtd away during unprecedented floods in river Bhagirathi and this necessitated the construction of a new road on the left bank. For the construction, a dozer had to be moved across the fast flowing river which posed tht danger of the dozer with its operator being washed away.

Despite the heavy odds and danger to his life, G-44427 Driver Mechanical Equipment Nachhetar Singh volunteered to undertake this risky venture on the 20th June, 1981. To avoid his being washed away by the swift current Shri Nachhetar Singh tied a rope to his waist and moved the dozer into the river. The dozer got struck in mid stream and started drifting perilously downwards. Shri Nachhetar Singh displaytd great presence of mind and excellent professional skill and manoeuvred the dozer across the river. After crossing the river, the dozer had to climb a narrow and

steep slope. At one point while negotiating the steep slope, the dozer hung perilously on the brink. Shri Nachhetar Singh, disregarding personal safety, manoeuvred the dozer over the slope.

In this action Driver Mechanical Equipment Nachhetar Singh displaytd undaunted courage, presence of mind, professional skill and devotion to duty of a high order.

24. JC-130106 SUBEDAR DHARAM SINGH KANDARI, ASSAM RIFLES

(Effective date of Award : 22nd June, 1981)

On the 22nd June, 1981, an Infantry Battalion with a platoon of Assam Rifles under command, planned an operation to seal the Indo-Burmese border with a view to trap the hostiles' infiltration/exfiltrating into and from Nagaland. Subedar Dharam Singh Kandari of Assam Rifles was the Platoon Commander of a column.

At about 0645 hours, approximately one hundred hostiles launched a deliberate and daring day light attack on parent post. Hearing the heavy firing he immediately contacted his Commanding Officer and told him about the attack. Subedar Kandari led his Platoon with great speed and placed stops on all likely escape routes.

At about 1030 hours, a group of approximately twenty hostiles ran into the ambush laid by Subedar Kandari and his gallant men fired at the hostiles at close range and injured a number of them. Subedar Kandari with Rifleman Tez Singh and Rifleman Damar Bahadur immediately chased the fleeing hostiles through thick undergrowth and over-took approximately ten hostiles and trapped them. Subedar Kandari ordered his two companions to fire at the hostiles from two flanks and with utter disregard to his personal safety crawled through the thick undergrowth and in a daring physical scuffle captured one hostile with a 7.62 MM Semi Automatic Rifle and 50 rounds of ammunition. Meanwhile, another group of the hostiles arrived in the area and started firing at Subedar Kandari and his men from all directions with automatic rifles and rockets. Subedar Kandari, with great presence of mind, knocked down the captured hostile unconscious and crawled towards another hostile who was firing at him from close range. Inspired by Subedar Kandari's utter disregard for personal safety, his companions crawled towards the hostiles, took them on at close range and contured one hostile each alongwith their weapons and ammunition.

During the entire operation Subedar Dharam Singh Kandari displayed great initiative, presence of mind, courage, exemplary leadership and devotion to duty of a very high order.

25. 132979 RIFLEMAN DAMAR BAHADUR, ASSAM RIFLES

(Effective date of Award : 22nd June, 1981)

On the 22nd June 1981, an Infantry Battalion with a Platoon of Assam Rifles planned an operation to seal the border with a view to trap the hostiles infiltrating/exfiltrating into and from Nagaland. Refleman Damar Bahadur was a member of the Platoon of Assam Rifles under command of Sub Dharam Singh Kandari. At about 0645 hours, sound of heavy firing was heard from the parent post, which was under attack by about one hundred hostiles. Rifleman Damar Bahadur with his companions moved fast and established stop positions to cover all likely routes of exfiltration. At about 1030 hours, approximately twenty hostiles encountered them. The hostiles fired at Rifleman Damar Bahadur and his companions and ran through thick undergrowth. Undaunted, Rifleman Damar Bahadur and his companions chased the hostiles and over-took them after about 30 minutes of hot chase. During the ensuing hand-to-hand fight, Rifleman Damar Bahadur, in a daring physical scruffle, captured one hostile with one rocket.

During the entire action Rifleman Damar Bahadur displayed great initiative, presence of mind, courage and devotion to duty.

26. FLYING OFFICER JANKIRAMAN BALASUBRAMANIAN (15558), FLYING (PILOT)

(Effective date of Award : 26th August, 1981)

On the 26th August, 1981, Flying Officer Jankiraman Balasubramanian (15558), Flying (Pilot), took off for an air dropping sortie in Eastern Sector. The Dropping Zone was one of the Southern-most low lying dropping Zone. The flight was uneventful till aircraft reached the dropping Zone. On his very first run for the drop, Flying Officer Balasubramanian heard a loud backfiring noise from his port engine followed by severe vibrations and smoke. Flying Officer Balasubramanian quickly checked his engine instruments and confirmed the failure of port engine. He not only controlled the aircraft at this critical stage of flight but avoided the hill in front of him in a cool, confident and courageous manner and simultaneously shut down the port engine. Flying Officer Balasubramanian found that his aircraft was not climbing on one engine. He quickly ejected the load and managed to gain the badly needed height to 1500 which was his minimum escape route height. He flew the striken aircraft on one engine for over one hour over hilly terrain fighting turbulence and keeping a hawk's tye on the temperature of his live engine. He thus succeeded in bringing the aircraft back to base and made a perfect touch down.

Flying Officer Jankiraman Balasubramanian, with his flying experience of only 270 hours, handled this grave emergency in an exemplary and professional manner and thus saved eight valuable lives on board.

27. 67001880 NAIK TUL BAHADUR CHETRY, BORDER SECURITY FORCE *(Posthumous)*

(Effective date of Award—8th October, 1980)

67001880 Naik Tul Bahadur Chetry was Sector Commander of a Company of Border Security Force located at an out post on the international border in East District of Manipur State. On 6th October, 1980, Naik Tul Bahadur Chetry was detailed to accompany a mixed patrol of Border Security Force and Village Volunteer Force personnel under the overall command of the Army to carry out reconnaissances and destroy any elements of People's Liberation Army lurking along the international border. On the 8th October 1980, having received confirmed information about the presence of a People's Liberation Army Camp in the area, the commander detailed a raiding party and four stop parties. Naik Tul Bahadur Chetry who carried an automatic rifle, was detailed to accompany a stop party. At about 1515 hours, about 15 people's Liberation Army men appeared in front of the stop party. Naik Tul Bahadur Chetry saw the first people's Liberation Army men and, before they could reach, fired and shot two of them dead. Heavy exchange of fire continued for more than 30 minutes and later the firing stopped from People's Liberation Army. Considering that People's Liberation Army had the advantage of reight, he planned to occupy the higher area by taking up the commanding position. Slowly and surreptitiously without giving any indication to the enemy, he moved, followed by three of his companions. No sooner did he reach a large tree, he suddenly observed some movement immediately followed by automatic and single round fire focussed on him. Without any further loss of time, he shot another insurgent dead. Then finding the target lucrative for a grenade, he pulled one grenade out and as he tried to take out the pin, he got a volley of automatic fire and died on the spot.

Naik Tul Bahadur Chetry thus displayed exemplary devotion to duty, undaunted courage, bravery and extremely high sense of leadership.

New Delhi, the 2nd April, 1982

No. 20-Pres/82.—The President is pleased to approve of the award of 'SHAURYA CHAKRA' to the undermentioned persons for acts of gallantry to :—

1. LIEUTENANT COMMANDER SUBODH VASUDEO PUROHIT (01066-Y)

(Effective date of Award—1st February 1981)

On the 1st February, 1981, Lieutenant Commander Subodh Vasudeo Purohit (01066-Y) IN, Test Pilot, Indian Navy, was ferrying Seaking from Minicoy Island to Cochin, a distance of 225 miles over the sea. The aircraft took off from the island at 1630 hrs. After approximately one hour, about 120 nautical miles from Cochin, while flying at 7000 ft, the aircraft suddenly developed very severe vibrations with partial loss of control of the aircraft. The vibrations were so violent that the pilots could not even steady themselves in the seat. Despite all possible corrective actions, the vibrations continued. Lt. Cdr. Purohit very quickly analysed the emergency and realised that any

attempt to continue the flight would lead to disintegration of the aircraft. He immediately decided to ditch the aircraft in the sea. Just prior to touch down on water, the tail section of the aircraft alongwith the tail rotor broke off from the aircraft. This severely degraded the control of the aircraft. Lt. Cdr. Purohit executed a flawless ditching despite total lack of directional control and persistent severe vibrations. He displayed exceptional flying skill and a very high standard of airmanship while handling the grave emergency and was thus responsible for the entire crew not sustaining any injury during the accident. Having landed safely on water he tackled the problem of sea survival. In the subsequent eight hours and in pitch dark night conditions, the exemplary leadership and composed and cool behaviour of Lt. Cdr. Purohit resulted in the entire crew becoming one cohesive and resolute group confident of overcoming the adverse conditions and resolved the difficult task of sea survival. It also resulted in high morale of the crew members in adverse psychological conditions. Lt. Cdr. Purohit was also the last member of the crew to leave the aircraft just before it capsized.

Lieutenant Commander Subodh Vasudeo Purohit thus displayed leadership, courage, professional skill and devotion to duty of a very high order.

2. DILBAG SINGH SIDHU, LEADING SEAMAN, CLEARANCE DIVER III (NUMBER 096898Z)

(*Effective date of Award*—21*st February*, 1981)

On the 21st February, 1981, at about 1635 hours, mother of Shri S. N. Katdare, Store Keeper, Naval Armament Depot, Karanja, was trying to board the Dockyard Boat 'Nancy'. While doing so she slipped and fell into the water, between the Pontoon and the boat. Dilbag Singh Sidhu, Leading Seaman, Clearance Diver III, Number 096898Z, who was standing by to board the boat, in total disregard to his personal safety, jumped into the water. Dockyard Boat 'Nancy' is a very heavy boat and anything coming between the boat and pontoon is bound to be crushed. Undaunted by the grave immediate danger, Leading Seaman Sidhu, at great risk to himself held the boat off from the jetty with his back and rescued the lady who had meanwhile gone below the surface of water. The old lady would have been certainly crushed between the boat and the jetty and drowned had Leading Seaman Sidhu not taken this daring step. This was the second occasion on which Leading Seaman Sidhu had saved a human life from waters around Karanja.

By his repeated acts of bravery Dilbag Singh Sidhu, Leading Seaman, Clearance Diver III, displayed extreme alertness, courage and presence of mind.

3. SQN LDR. GURCHARAN SINGH MADAN (10452) F(P).

(*Effective date of Award*—21*st July*, 1981)

On the 21st July, 1981, Sqn. Ldr. Gurcharan Singh Madan (10452) F(P) of 117 Helicopter Unit, was detailed as Captain to fly a Chetak Helicopter from Bareilly to Gauchar with an enroute halt at Haldwani for refuelling. About 10 minutes after take off from Haldwani his helicopter suddenly pitched up and started rolling to the right. It immediately developed very severe vibrations and the control column started snatching in all directions. The severity of pitch up, roll and virbations was so great that he alongwith his co-pilot found it difficult to retain a grip on the control column and impossible even to read the instruments. The movement of the stick was so vicious that it repeatedly hit their legs, badly lacerating them. The Helicopter was out of control and a crash was imminent.

Sqn. Ldr. Madan with commendable presence of mind and cool courage analysed the emergency and came to the conclusion that the existing conditions could only be the outcome of a failure of the rotor head system as had been the case in two earlier fatal accidents. He immediately decided to forceland the helicopter on whatever open space he could find. With this intention he lowered the collective pitch. By this action the vibrations reduced slightly and he could retain grip on the control column with a great effort. A marginal control of the helicopter was thus achieved. With the control of the helicopter hanging in a very delicate balance, Sqn. Ldr. Madan brought down stricken helicopter to a small clearing for landing. The moment he raised the collective to cushion the landing shock, the vibrations again became very severe. It was only his superlative flying skill, exemplary courage and tenacity of purpose which helped him to land the helicopter with minimal damage.

In making this extremely difficult recovery of the helicopter without excessive damage, Sqn. Ldr. Gurcharan Singh Madan had not only saved a valuable aircraft and the lives of his co-pilot and his own but has made investigation of the cause of the failure possible which in future will save further accidents.

Sqn. Ldr. Gurcharan Singh Madan thus displayed exemplary courage, extremely high standard of flying skill and devotion to duty of a high order.

S. NILAKANTAN, Dy. Secy.
to the President

LOK SABHA SECRETARIAT

New Delhi-110001, the 17th March 1982

No. 4/3/80-RCC.—Shri Pranab Mukherjee, Member, Rajya Sabha has been nominated on 9th March, 1982 to serve as a Member of the Parliamentary Committee to review the rate of dividend payable by the Railway Undertaking to General Revenues as well as other ancillary matters in connection with the Railway Finance *vis-a-vis* the General Finance in the vacancy caused by the resignation of Shri Manendra Mohan Mishra from the membership of the Committee w.e.f. 6th March, 1982.

H. G. PARANJPE, Jt. Secy.

MINISTRY OF COMMERCE
(DEPARTMENT OF COMMERCE)

New Delhi, the 8th March 1982

RESOLUTION

No. 4/2/81-EPZ.—The Government of India have decided to extend the term of the Task Force set up vide Resolution No. 4/2/81-EPZ dated the 7th September, 1981, to review the working of the Free Trade Zones for another four months *i.e.* 31st July, 1982.

ORDER

ORDERED that the Resolution may be published in the Gazette of India for general information and communication to all Ministries of the Government of India and all State Governments.

K. G. RAMANATHAN, Jt. Secy.

DEPARTMENT OF ENVIRONMENT

New Delhi, the 17th March 1982

CORRECTION

No. 1/9/81-NLDB/Fin.-5.—In the Department of Environment's Resolution No. 1/9/81-ENV., dated 4/8th January, 1982, relating to the nomination of six eminent Scientists on the National Eco-Development Board, the name and the address appearing at Sl. No. 3 is corrected to read as under :—

Shri K. M. Tiwari,
President,
Forest Research Institute and Colleges,
Dehra Dun (U.P.).

ORDER

ORDERED that the correction be published in the Gazette of India.

ORDERED also that a copy of the correction be communicated to all State Governments, Administration of Union Territories, Ministries/Departments of the Government of India, Planning Commission, Railway Board, President's Secretariat, Vice-President's Secretariat, Cabinet Secretariat, Prime Minister's Office, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, All Members of the Council of Ministers and all Members of the Board.

N. D. JAYAL, Jt. Secy.

MINISTRY OF AGRICULTURE

(DEPARTMENT OF AGRICULTURE & COOPERATION)

New Delhi, the 15th January 1982

RESOLUTION

Subject :—Reconstitution of the Court and the Executive Council of the Forest Research Institute and Colleges, Dehra Dun.

No. 12-30/80-FRY(FRE).—By Resolution No. 12-4/59-F dated the 4th November, 1961 issued by the Ministry of Food & Agriculture, the Court of the Forest Research Institute & Colleges and its Executive Council were constituted. It has now been decided to reconstitute the aforesaid Court and its Executive Council as follows :—

COMPOSITION OF THE COURT OF THE FOREST RESEARCH INSTITUTE AND COLLEGES

Chairman

1. Union Minister of Agriculture

Pro-Chairman

2. Minister of State (Agriculture) in the Ministry of Agriculture

Vice-Chairman

3. Secretary (Agriculture & Cooperation), Government of India

Members

4. Lok Sabha Members (Two)
5.
6. Rajya Sabha Member (One)
7. Adviser (Agriculture), Planning Commission
8. Secretary, Department of Environment, Government of India
9. Secretary, Department of Science and Technology, Government of India
10. Inspector-General of Forests.
11. President, Forest Research Institute and Colleges.
12. Director-General, Council of Scientific & Industrial Research
13. Director-General, Indian Council of Agricultural Research
14. Financial Adviser, Department of Agriculture & Co-operation, Government of India.
15. Director, Indian Institute of Forest Management.
16. Director, Forest Survey of India
17. One Chief Conservator of Forests from each Region to
20. (Northern, Southern, Western and Eastern) by rotation.

Member-Secretray

21. Joint Secretary in the Forestry Division of the Department of Agriculture & Cooperation, Government of India.

COMPOSITION OF THE EXECUTIVE COUNCIL OF THE COURT

Chairman

1. Secretary (Agriculture & Cooperation), Government of India

Members

2. Adviser (Agriculture), Planning Commission.
3. Inspector-General of Forests
4. President, Forest Research Institute and Colleges
5. Director General, Indian Council of Agricultural Research
6. Director General, Council of Scientific and Industrial Research
7. Financial Adviser, Department of Agriculture and Cooperation Government of India
8. Director, Indian Institute of Forest Management.

Member-Secretary

9. Joint Secretary in the Forestry Division of the Department of Agriculture & Cooperation, Government of India.

Plus

One Chief Conservator of Forests, from each Region (Northern, Southern, Western and Eastern), by special invitation for one year at a time.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all Ministries and Departments of the Government of India and all the State Governments and Union Territories (Forests Departments), Planning Commission, Cabinet Secretariat, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, President's Secretariat, Prime Minister's Secretariat, Comptroller and Auditor General of India and all members of the Court of the Forest Research Institute & Colleges, Dehra Dun and its Executive Council.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for General Information.

SAMAR SINGH, Jt. Secy.

MINISTRY OF COMMUNICATIONS

(POSTS AND TELEGRAPHS BOARD)

New Delhi-110001, the 18th March 1982

No. 11-4/81-LI.—The President is pleased to make the following further amendments to the Postal Life Insurance and Endowment Assurance Rules, namely :—

1. (1) These rules may be called the Postal Life Insurance and Endowment Assurance (Amendment) Rules, 1982.

(2) They shall come into force on the 1st day of January, 1982.

2. In the Postal Life Insurance and Endowment Assurance Rules, in rule 3,—

(i) after the existing NOTE below Rule (3), the following NOTE shall be added, namely :—

"NOTE—The proposals from physically handicapped persons like blind, deaf and dumb etc. upto a maximum sum assured of Rs. 10,000/- may be accepted provided the persons are eligible for insurance with PLI in terms of the Post Office Insurance Fund Rules and are declared medically fit by the Medical Officer examining the proponent for insurance with the PLI."

This issues with the concurrence of Ministry of Finance (Department of Economic Affairs—Insurance Division) vide their U.O. No. 17-Ins. Actl. (1)/81 dated 13th November, 1981 and P&T Finance Dy. No. 167-FA-III/82, dated 18th January, 1982.

M. R. ISSARANI, Director (PLI)

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1982